मसीही बुनियादें



John Hall

मसीही बुनियादें

Christian Basics

John Hall

यह अध्ययन पुस्तक अंग्रेज़ी में प्रकाशित की गई:
TRINITY GRACE PUBLICATIONS, UK, (2016)

हिंदी में प्रकाशित: :

TFK CHRISTIAN EDUCATION CENTER (2026)
CHEPPAD, KERALA STATE, 690 507, INDIA.
tfkchristianeducation@gmail.com
Phone: 96669 13402

विषय-सूची

भूमिका		7
पाठ 1	पवित्र शास्त्र बाइबिल	9
पाठ 2	जीवित परमेश्वर	15
पाठ 3	यीशु मसीह: मध्यस्थ	20
पाठ 4	मनुष्य: हमारा वास्तविक स्वभाव	26
पाठ 5	उद्धार में परमेश्वर का कार्य	31
पाठ 6	मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान	32
पाठ 7	पवित्र आत्मा: उनका व्यक्तित्व और कार्य	40
पाठ 8	उद्धार देने वाला विश्वास	44
पाठ 9	मसीही जीवन जीना	48
पाठ 10	स्वर्ग और नरक	53
पाठ 11	कलीसिया	57
पाठ 12	बपतिस्मा और प्रभु भोज	62

यहाँ से मुझे कहाँ जाना है ? 67

भूमिका

यह सरल अध्ययन मसीही विश्वास का परिचय देता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि बाइबिल क्या सिखाती है। इसे आप खुद पढ़ सकते हैं; इसे अकेले में, या किसी मार्गदर्शक के नेतृत्व में छोटे समूहों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

बाइबिल की आयतों को खुद पढ़ना और वे क्या कहती हैं इस पर विचार करना बहुत महत्वपूर्ण है। तब आप खुद सीधे समझ सकते हैं कि बाइबिल क्या सिखाती है। आपका विवेक केवल परमेश्वर के वचन के अधीन होना चाहिए। इसलिए, परमेश्वर ने जो प्रकट किया है, उसे पवित्र शास्त्र से ही समझ लेना और आश्वस्त होना आवश्यक है।

यदि आप एक मसीही नहीं हैं, तो बाइबिल जो कहती है उसे पढ़ते समय, इसमें मन फिराने, विश्वास करने और यह स्वीकार करने का बुलावा है कि यीशु मसीह आपके प्रभु और उद्धारकर्ता हैं।

यदि आप एक मसीही विश्वासी हैं, तो यह आपको बारह बुनियादी विषयों के बारे में स्पष्ट रूप से समझ देगा। परमेश्वर का वचन पढ़ते और उसका प्रचार सुनते समय उसे अधिक समझने और आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए यह आपको एक मजबूत नींव प्रदान करेगा।

यह अध्ययन इस दृष्टिकोण से तैयार किया गया है कि बाइबिल परमेश्वर का वचन है, और हमें क्या विश्वास करना चाहिए तथा उसे अपने जीवन में कैसे लागू करना चाहिए, इस पर अंतिम अधिकार बाइबिल का ही है।

इस अध्ययन में आपको कलीसिया के विभिन्न विश्वास-सूत्रों, प्रश्नोत्तरियों (catechisms) और अंगीकार-पत्रों के उद्धरण देखने को मिलेंगे; विशेष रूप से 1689 की दूसरी लंदन बैपटिस्ट अंगीकार (2LCF) और बैपटिस्ट प्रश्नोत्तरी। कलीसिया के इतिहास के इन बयानों को हमने इसलिए शामिल किया है क्योंकि वे बाइबिल की शिक्षाओं का स्पष्ट और सटीक रूप से प्रस्तुत करते हैं। हम इन विश्वास-सूत्रों और प्रश्नोत्तरियों का अध्ययन करने की सलाह देते हैं। कुछ स्थानों पर पुरानी शैली को बदलकर आधुनिक भाषा में किया गया है, लेकिन इसके मूल विचार में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

ईश्वरशास्त्रीय (theological) शब्दों को छोड़ने के बजाय, उन्हें यहाँ सरलता से समझाया गया है।

अधिक अध्ययन में मदद करने वाले संसाधनों के लिए www.brokenwharfe.com पर जाएँ।

अध्ययन में मुख्य वचनों को तिरछे (italics) अक्षरों में दिया गया है (कृपया इन सभी को ज़रूर पढ़ें)। अधिक जानकारी के लिए सहायक वचन कोष्ठक [brackets] में दिए गए हैं [आगे के अध्ययन के लिए आप इन्हें देख सकते हैं]।

{यह दूसरा संस्करण ओलिवर अलमंड-स्मिथ द्वारा तैयार किया गया है। इसके विषय में किए गए कई सुधारों से लेखक जॉन हॉल बहुत संतुष्ट हैं। धन्यवाद!}

पाठ 1: पवित्र शास्त्र बाइबिल

यहाँ से शुरुआत क्यों करें? हम कैसे जान सकते हैं कि सत्य क्या है?

इसका सरल उत्तर यह है कि बाइबिल परमेश्वर का हमसे बोलना (बात करना) है। जब यह तय करने की बात आती है कि सत्य क्या है, तो हम कई तरह के दावों को सुनकर भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए, हम यह संदेह करने लगते हैं कि क्या 'सत्य' नाम की कोई चीज़ है भी? हम पूछते हैं, "क्या यह सब केवल हर किसी की अपनी-अपनी राय नहीं है?"

यह तय करने के कई तरीके हैं कि सत्य क्या है:

1) अपनी खुद की 'बुद्धि' पर भरोसा करना, या विद्वानों की बातों पर भरोसा करना!
2) अतीत में लोगों ने जो सिखाया है और जो ज्ञान हमें परंपरा से मिला है, उस पर विश्वास करना।
3) जो आपको लगता है और जो आपको सही महसूस होता है, उस पर विश्वास करना; या फिर ऊपर बताई गई बातों का मिला-जुला रूप।

ये सब हमारे अपने विचारों और समझने की कोशिशों से पैदा होते हैं। इसका एक दूसरा रास्ता भी है; वह यह कि परमेश्वर हमारे सामने सत्य को प्रकट करे, इसके लिए हम उसकी ओर देखें। यदि हमें परमेश्वर से एक भरोसेमंद प्रकाशन मिलता है, तो हम निश्चय के साथ कह सकते हैं कि सत्य क्या है।

परमेश्वर खुद को कैसे प्रकट करता है?

एक विचार यह है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को विचारों या भावनाओं के माध्यम से सीधे खुद को प्रकट करता है। इसमें समस्या यह है कि यह पूरी तरह से केवल व्यक्तिगत अनुभव पर निर्भर है। हम अविश्वसनीय विचारों और भावनाओं से हमेशा धोखा खा सकते हैं या भटक सकते हैं।

लेकिन, यदि परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को लिखे हुए वचनों के रूप में हमें दिया है, तो हमारे पास भरोसा करने के लिए एक मजबूत आधार है। बाइबिल यही दावा करती है — दिव्य प्रकाशन।

2 तीमुथियस 3:16 पढ़ें।

संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है

बाइबिल में 66 पुस्तकें हैं, जिन्हें लगभग 1500 वर्षों की अवधि में कई मनुष्यों द्वारा लिखा गया था। इसकी कहानी का क्रम इस प्रकार है:

परमेश्वर ने संसार को अच्छा बनाया। पहले पुरुष और स्त्री ने आज्ञा न मानी; उनके पाप के कारण दुख और मृत्यु संसार में आ गए। परमेश्वर ने पाप और उसके विनाशकारी परिणामों से मानवजाति को बचाने के लिए एक उद्धारकर्ता/छुटकारा देने वाले को भेजने की प्रतिज्ञा की (बाइबिल में इसे 'वाचा' कहा जाता है)। पुराने नियम का बाकी हिस्सा परमेश्वर द्वारा अपनी चुनी हुई प्रजा, इस्राएल के साथ की गई इस वाचा के माध्यम से आगे बढ़ता है।

नया नियम उद्धारकर्ता के जीवन (सुसमाचारों में) और उनकी शिक्षाओं के परिणामों (प्रेरितों के काम और पत्रियों में) का वर्णन करता है। अंतिम पुस्तक परमेश्वर के लोगों की विजय और सभी बुराइयों पर परमेश्वर के अंतिम न्याय और जय के बारे में बताती है। जब उद्धारकर्ता वापस आएगा, तो वह नए आकाश और नई पृथ्वी के साथ एक नया युग लाएगा। वहाँ मसीह अपने छुड़ाए हुए सभी लोगों के साथ सदा-सर्वदा राज्य करेगा।

एक समय-रेखा (time line) खींचें और बाइबिल के बारे में जो कुछ आप जानते हैं, उसे उस पर लिखें।

बाइबिल यह दावा करती है कि वह मनुष्यों को दिया गया परमेश्वर की प्रेरणा से रचा हुआ प्रकाशन है, जो पूरी तरह से विश्वसनीय और भरोसेमंद है। *2 पतरस 1:16-21* में पतरस इस बात को स्पष्ट करता है। यह हमारे सामने एक स्पष्ट विकल्प रखता है: या तो पवित्रशास्त्र के लेखक जानबूझकर झूठ बोलने वाले थे, या वे धोखा खाए हुए थे, या फिर उन्होंने सचमुच परमेश्वर का वचन ही लिखा था। समय की कसौटी पर खरी उतरी बाइबिल ने सभी विरोधों का जवाब दिया है और यह साबित किया है कि यह भरोसेमंद है। इसका कारण यह है: परमेश्वर ने हमें इस तरह बनाया है कि हम उसके वचन को ग्रहण कर सकें; वह सब कुछ पूरी तरह से जानता है। उसने उन बातों को जिन्हें जानना हमारे लिए आवश्यक है, हमें समझ आने वाले तरीके से प्रकट करने का निर्णय लिया।

बाइबिल के लेखकों के दावों को देखें:

पुराना नियम में: *निर्गमन 34:27; यशायाह 8:1, 5; [भजन संहिता 33:4; भजन संहिता 18:30; भजन संहिता 19:7-11]।*
नया नियम में: *2 तीमुथियस 3:16; 2 पतरस 1:16-21; [प्रकाशितवाक्य 1:1-3]।*

बाइबिल के अधिकार के दावे पर हमें क्यों विश्वास करना चाहिए?

हमें बाइबिल की प्रामाणिकता और अधिकार पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि स्वयं परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने बाइबिल (पुराने नियम) के अधिकार को पूरी तरह स्वीकार किया, और नये नियम में भी स्वयं के पास वही अधिकार होने का दावा किया। उन्होंने किसी अन्य पुस्तक को ऐसा स्थान नहीं दिया।

मत्ती 19:4; मत्ती 5:17-18; यूहन्ना 17:12-17; यशायाह 61:1-2 और इसके साथ लूका 4:17-21; यूहन्ना 5:37-39; यूहन्ना 14:6 को भी देखें।

प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं। वे पिता की इच्छा पूरी करने और उन्हें हमारे सामने प्रकट करने के लिए स्वर्ग से भेजे गए थे *(यूहन्ना 1:14-18)*। यदि यीशु ने पुराने नियम को पूरी तरह से भरोसेमंद माना, अपने जीवन के उद्देश्य को उसमें से समझा, और खुद को पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को पूरा करने वाला तथा मनुष्यों के लिए परमेश्वर का अंतिम प्रकटीकरण घोषित किया, तो क्या हमारा भी बाइबिल के प्रति वही दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए?

[ध्यान दें कि प्रभु यीशु ने परीक्षाओं का सामना करते समय *(मत्ती 4:1-11)* और विवादों को सुलझाते समय *(लूका 20:27-40, यूहन्ना 10:35)* पवित्रशास्त्र का उपयोग कैसे किया। यह स्पष्ट करता है कि वे पुराने नियम को पूरी तरह से सच्चा और भरोसेमंद मानते थे।]

यीशु मानते थे कि उनकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है और उनके वचनों को परमेश्वर का पूरा अधिकार प्राप्त है (यूहन्ना 7:16-17; [यूहन्ना 12:49])।

नया नियम के बाकी हिस्सों के बारे में, यीशु ने स्पष्ट किया कि खुद सीधे बोलने के अलावा, जिन्हें उन्होंने चुना और भेजा (प्रेरितों) द्वारा लिखा गया सब कुछ पवित्र आत्मा की ओर से है, और उन पर अपने विषय में प्रकटीकरण के रूप में पूरा भरोसा किया जा सकता है *(यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:14)।*

यीशु ने पुराने नियम को परमेश्वर की प्रेरणा से रचा हुआ वचन माना; देह में रहते हुए उन्होंने परमेश्वर का वचन बोला; अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद नये नियम को पूरा करने के क्रम में, उन्होंने वादा किया कि पवित्र आत्मा प्रेरितों को सब सत्य के मार्ग में ले जाएगा। प्रेरितों ने इसे स्पष्ट रूप से समझा और नीचे दी गई बातें लिखीं। हमने पहले जो देखा था, उसके साथ इन्हें भी देखें: *2 पतरस 3:15-16; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13; इब्रानियों 1:1-3।*

(यह देखने के लिए कि नये नियम के लेखक पुराने नियम का उपयोग कैसे करते हैं, *इब्रानियों 1:5 के साथ भजन संहिता 2, और इब्रानियों 3:7-11 के साथ भजन संहिता 95 देखें।)*

विचार करने के लिए प्रश्न

1. क्या वचन महत्वपूर्ण हैं? *गलतियों 3:16।* इसके प्रकाश में, एक सटीक रूप से अनुवाद का उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है, जो मूल भाषाओं के निकट रहे।
2. क्या पवित्रशास्त्र संपूर्ण है? *प्रकाशितवाक्य 22:18-19; व्यवस्थाविवरण 12:32; [भजन संहिता 119:105, 130]।*
3. इसकी रचना में मनुष्यों की क्या भूमिका थी? *प्रेरितों के काम 1:16; [लूका 1:70; प्रेरितों के काम 3:18]।*
4. इसके दावों का समर्थन करने के लिए दिए गए अन्य प्रमाण:
    - ☙ भविष्यद्वाणियाँ लिखे जाने के कई सालों बाद पूरी हुई, जैसे *यशायाह 53, भजन संहिता 22।*
    - ☙ कई सदियों में कई इंसानों के ज़रिए लिखे जाने पर भी, एक ही पुस्तक के रूप में इसकी कहानी और संदेश की निरंतरता।
    - ☙ अपने उद्देश्य को पूरा करना, जैसा यह दावा करती है वैसा ही करना, और लोगों को मसीह यीशु में उद्धार के लिए बुद्धिमान बनाना।

यदि बाइबिल सचमुच परमेश्वर का वचन है, तो हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?
यूहन्ना 8:31-32; याकूब 1:21; [यूहन्ना 10:27; भजन संहिता 119:9-16, 18; यूहन्ना 7:16-17]।

सारांश

- बाइबिल यह दावा करती है कि वह परमेश्वर का वचन है, और इसलिए सत्य है।
- इसके लेखकों ने माना कि वे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से परमेश्वर का ही वचन
- लिख रहे हैं।
- यीशु मसीह ने पूरी बाइबिल को परमेश्वर का वचन माना।
- इतने सारे लोग इतनी आसानी से बाइबिल के दावों को क्यों ख़ारिज कर देते हैं? यदि बाइबिल सत्य है, और हमारा सृष्टिकर्ता परमेश्वर इसमें हमसे बात कर रहा है, तो इसे अनदेखा करना सरासर मूर्खता होगी।

एंग्लिकन कलीसिया के दूसरी लंदन बैपटिस्ट अंगीकार (2LCF) से:

"पवित्र शास्त्र (बाइबिल) ही उद्धार देने वाले सभी ज्ञान, विश्वास और आज्ञाकारिता का एकमात्र पर्याप्त, निश्चित और अचूक नियम है।" (2LCF अध्याय 1, पद 1)

प्रश्न

1. अपने शब्दों में लिखें कि आप बाइबिल को परमेश्वर का वचन क्यों मानते हैं?
2. क्या बाइबिल को परमेश्वर का वचन मानने में आपको कोई परेशानी या सवाल हैं? यदि हैं, तो उन्हें लिखें और सोचें कि आप उनका उत्तर कैसे दे सकते हैं। यदि आप अभी भी इसे लेकर उलझन में हैं, तो अपने पादरी (pastor) या किसी आत्मिक रूप से परिपक्व मसीही से सलाह लें।
3. बाइबिल परमेश्वर का हमसे बात करना है। हमारे जीवन पर इसका क्या असर होना चाहिए? क्या आप अपने जीवन में इसके असर का कोई उदाहरण दे सकते हैं?

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *सत्य के अलावा कुछ नहीं (Nothing but the Truth) - ब्रायन एडवर्ड्स (इवेंजेलिकल प्रेस)*

- ✓ *क्या हम सुसमाचारों पर भरोसा कर सकते हैं? (Can We Trust the Gospels?)* - पीटर जे. विलियम्स (क्रॉसवे)
- ✓ *वचन से लाभ (Profiting from the Word)* - ए. डब्ल्यू. पिंक (बैनर ऑफ ट्रुथ)

अध्ययन 2: जीवित परमेश्वर

क्या परमेश्वर को जानना एक महत्वपूर्ण बात है?

इसके लिए जितने हो सकें उतने कारणों पर विचार करें। इसके बाद, परमेश्वर को जानने की आशीष को देखने के लिए *यूहन्ना 17:3*, और परमेश्वर को न जानने का क्या परिणाम होता है यह देखने के लिए *यिर्मयाह 4:22* पढ़ें।

मनुष्य परमेश्वर को कैसे जान सकता है?

सृष्टि और विवेक हमें यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर अस्तित्व में है, और वह भला और धर्मी है। जैसा कि हम दूसरे लंदन अंगीकार (Second London Confession) अध्याय 1, अनुच्छेद 1 में पढ़ते हैं: "प्रकृति का प्रकाश, सृष्टि और परमेश्वर का प्रबंध (देखभाल) परमेश्वर की भलाई, ज्ञान और सामर्थ्य को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं; इसलिए मनुष्यों के पास कोई बहाना नहीं है।"

- सृष्टि यह प्रकट करती है कि परमेश्वर सामर्थी, महान और भला है *(भजन संहिता 19:1-6; रोमियों 1:18-20)।*
- मनुष्य की चेतना में परमेश्वर के स्वरूप और समानता के अवशेष छपे होने के कारण, विवेक परमेश्वर के धर्म के स्वभाव के बारे में कुछ न कुछ प्रकट करता है *(रोमियों 2:14-15; सभाउपदेशक 7:29)।*
- इसके प्रकाश में, किसी का यह कहना कि "परमेश्वर नहीं है", मूर्खता है! हमारे बाहर प्रकृति के नियम और हमारे अंदर धर्म का नियम मौजूद होते हुए भी, कोई ऐसा क्यों कहेगा? नास्तिकता (Atheism) को केवल बड़े प्रयासों से ही बनाए रखा जा सकता है; जैसा कि कहा जाता है, एक परमेश्वर विश्वासी की तुलना में नास्तिक को अधिक बड़े विश्वास की आवश्यकता होती है!

फिर भी, सृष्टि और विवेक हमें परमेश्वर को पूरी तरह से जानने के लिए आवश्यक सब कुछ प्रकट नहीं करते हैं। जैसा कि हम दूसरे अंगीकार (Second Confession) अध्याय 1, अनुच्छेद 1 में फिर से पढ़ते हैं: 'यद्यपि प्रकृति का प्रकाश, सृष्टि और परमेश्वर की देखभाल (प्रबंध) परमेश्वर की भलाई, ज्ञान और सामर्थ्य

को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं, फिर भी वे उद्धार के लिए आवश्यक परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा को जानने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए प्रभु को अपने पवित्रशास्त्र के माध्यम से स्वयं को प्रकट करना अच्छा लगा।'

परमेश्वर कैसा है और वह हमसे क्या अपेक्षा करता है, यह हम केवल उसके विशेष प्रकटीकरण (revelation) के माध्यम से ही स्पष्ट रूप से जान सकते हैं। अर्थात, परमेश्वर ने अपने लिखित वचन के द्वारा और अपने पुत्र के द्वारा, जो देहधारी (देह धारण करने वाला) वचन है, हमसे बात की है *(यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 1:1-3)*।

बाइबिल परमेश्वर के बारे में क्या कहती है?

बैपटिस्ट बाइबल अध्ययन (Baptist Catechism) में बाइबिल परमेश्वर के बारे में जो सिखाती है, उसे इस प्रकार संक्षेप में बताया गया है: "परमेश्वर आत्मा है; वह अपनी सत्ता, ज्ञान, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य में अनंत, नित्य और अपरिवर्तनीय (न बदलने वाला) है।"

- परमेश्वर आत्मा है: *यूहन्ना 4:24*। इसका क्या अर्थ है? जैसा कि हम दूसरे अंगीकार (अध्याय 2, अनुच्छेद 1) में पढ़ते हैं, परमेश्वर पूरी तरह से शुद्ध आत्मा है; वह अदृश्य है, और उसका कोई शरीर, अंग या मनोविकार नहीं हैं। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर शरीर के अंगों से नहीं बना है; वह शुद्ध अस्तित्व है; उसे विभाजित या नष्ट नहीं किया जा सकता। उसे कोई प्रभावित या नष्ट नहीं कर सकता।
- परमेश्वर अनंत और नित्य है: *भजन संहिता 90:2; 1 तीमुथियस 1:17*। इसका अर्थ है कि परमेश्वर के लिए स्थान या समय की कोई सीमा नहीं है। वह सभी सांसारिक और भौतिक बातों से परे है। उसमें कोई सीमा या कमी नहीं है *(निर्गमन 15:11; भजन संहिता 147:5)*।
- परमेश्वर अपरिवर्तनीय (न बदलने वाला) है: *मलाकी 3:6; याकूब 1:17*।
- परमेश्वर हर रीति से सिद्ध (पूर्ण) है: वह ज्ञान, सामर्थ्य और पवित्रता में सिद्ध है। वह सब की पूर्णता है *(निर्गमन 3:14)*।

इसके अलावा, परमेश्वर का अस्तित्व व्यक्तिगत और त्रिएक (Triune) है। वह तीन व्यक्तियों में एक ही परमेश्वर है:

- परमेश्वर एक व्यक्ति (व्यक्तित्व) है: वह केवल कोई विचार या शक्ति नहीं है। उसने स्वयं को व्यक्तिगत रूप से और अपने पुत्र के द्वारा हम पर प्रकट किया है *(निर्गमन 3:15; यूहन्ना 14:6-9)।*
- परमेश्वर अपनी सत्ता में एक ही है: वह विभाजित नहीं है (व्यवस्थाविवरण 6:4)।
- वह त्रिएक परमेश्वर है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - ये तीन व्यक्ति हैं; वे समान हैं और उनका एक ही अस्तित्व (सत्ता) है *(मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14)।*
- लंदन विश्वास अंगीकार में, अध्याय 2, अनुच्छेद 3: इस ईश्वरीय और अनंत सत्ता में तीन व्यक्ति हैं; पिता, वचन (या पुत्र), और पवित्र आत्मा। वे एक ही सत्ता, सामर्थ्य और नित्यता वाले हैं। प्रत्येक के पास पूर्ण ईश्वरीय अस्तित्व है, फिर भी वह सत्ता विभाजित नहीं है।

इन अद्भुत सच्चाइयों को सदियों से धर्मशास्त्रियों ने समझने का प्रयास किया है। भले ही इसे समझना हमारे लिए कठिन हो, फिर भी हमें इसे समझने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर हम पर बहुत दयालु है; वह ऐसी भाषा का उपयोग करके हमसे बात करता है जिसे हम समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, *निर्गमन 3:20* जैसे अंश परमेश्वर की बातों को इंसानी शब्दों में वर्णन करते हैं (इसे 'मानवीय रूपक' या मानवीरूपण कह सकते हैं)। परमेश्वर के पास कोई भौतिक हाथ या अन्य अंग नहीं हैं, फिर भी अपनी दया से वह हमसे बात करने के लिए ऐसे शब्दों का उपयोग करता है।

ईश्वरीय पूर्णताएँ (परमेश्वर की सिद्धताएँ)

परमेश्वर के गुण या सिद्धताएँ क्या हैं? इस भाग को सीखने में यदि बाकी हिस्सों से अधिक समय भी लगे, तो चिंता न करें; यही सब कुछ का आधार है! निम्नलिखित वचन-भागों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- परमेश्वर विश्वासयोग्य है, *1 कुरिन्थियों 1:9।*
- परमेश्वर प्रेम है, *1 यूहन्ना 4:8-9।*
- परमेश्वर सर्वोपरि (परम-अधिकारी) है, *अय्यूब 42:2।*
- परमेश्वर स्वतंत्र है; वह मनुष्य या किसी अन्य सृष्टि को जवाबदेह नहीं है, *दानिय्येल 4:35।*
- परमेश्वर सर्वव्यापी है, भजन संहिता *139:7-10।*

- परमेश्वर सर्वज्ञ (सब जानने वाला) है, *इब्रानियों 4:13।*
- परमेश्वर पवित्र है, *यशायाह 6:3।*
- परमेश्वर सामर्थी, धर्मी और खरा (न्यायी) है, *भजन संहिता 99:4।*

हम इसके बारे में और भी बहुत कुछ कह सकते हैं। परमेश्वर के क्रोध *(यूहन्ना 3:36),* उसकी बुद्धि *(यशायाह 28:29)*, और उसके सत्य *(व्यवस्थाविवरण 32:4)* के बारे में सोचें।
(बाइबल में ऐसे कई महान वचन-भाग हैं जो परमेश्वर की महिमा और उसकी पूर्णताओं को प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए: *भजन संहिता 103; यशायाह 40:10-21; रोमियों 11:33-36; 1 तीमुथियस 6:15-16; भजन संहिता 145:8-9; इफिसियों 1:11; भजन संहिता 115:3; यिर्मयाह 32:27; यहोशू 24:19; उत्पत्ति 18:25)।*

ऐसे परमेश्वर के समीप कैसे आ सकते हैं या उसे कैसे जान सकते हैं?

परमेश्वर की महानता, उसकी महिमा और उसकी पवित्रता को न समझने के कारण कई लोग यह प्रश्न नहीं पूछते। यह छोटा सा अध्ययन केवल एक शुरुआत है। फिर भी, यह हमें इस बड़े प्रश्न तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त है कि एक पापी सृष्टि ऐसे परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे खड़ी हो सकती है? हमारे लिए अपने आप यह असंभव है। हमें एक बिचवई (मध्यस्थ) की आवश्यकता है; सृष्टि और सृष्टिकर्ता के बीच, पापी और पवित्र परमेश्वर के बीच की दूरी को मिटाने वाला एक मध्यस्था वह व्यक्ति यीशु मसीह है *(1 तीमुथियस 2:5; इब्रानियों 4:12-16; [इब्रानियों 12:18-29])।*

परमेश्वर इतने महान हैं, इसलिए हमें उनके पास कैसे आना चाहिए?

क्या आप परमेश्वर के पास जाना चाहते हैं? यदि हाँ, तो हमें कब और कैसे उनकी उपस्थिति में आना चाहिए? इन वचनों को पढ़ते समय, खुद से पूछिए कि क्या आपने पहले कभी परमेश्वर की आराधना की है, और क्या आपकी आराधना परमेश्वर के सच्चे स्वभाव के अनुसार है? क्या आपको अपने आराधना करने के तरीके में बदलाव करने की ज़रूरत है? *(इब्रानियों 12:28; भजन संहिता 145:1-3; भजन संहिता 96:4-9; [भजन संहिता 100; 2 कुरिन्थियों 6:16-7:1]).*

प्रश्न

यशायाह 6:1-10 पढ़कर इन प्रश्नों के उत्तर दें:

1) जब हम कहते हैं कि परमेश्वर पवित्र है, तो इसका क्या अर्थ है?
2) परमेश्वर का सामना करने वाले व्यक्ति पर परमेश्वर की पवित्रता का क्या असर (प्रभाव) पड़ता है?
3) परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने पर जो समस्या होती है, उसका क्या समाधान है?
4) परमेश्वर के बारे में यह ज्ञान आपको क्या करने के लिए प्रेरित करता है? और क्यों?

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *"परमेश्वर है (God Is)* - मार्क जोन्स (क्रॉसवे)
- ✓ *परमेश्वर की पवित्रता (The Holiness of God)* - आर. सी. स्प्राउल (पब्लिशिंग हाउस)
- ✓ *परमेश्वर को जानना (Knowing God)* - जे. आई. पैकर (होडर एंड स्टॉटन)
- ✓ *तीनों एक हैं (The Three are One)* - स्टुअर्ट ओलीयॉट (इवेंजेलिकल प्रेस)

अध्ययन 3: यीशु मसीह: मध्यस्थ

ईसाईयों यीशु मसीह के अनुयायी हैं। वह हमारे विश्वास का केंद्र हैं। वह कौन हैं और किसलिए आए (उनका व्यक्तित्व और उनके कार्य), इसे समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल एक ही मध्यस्थ (बिचवई) है, और वह मसीह है *(1 तीमुथियस 2:5)।* ऐसा क्यों है, इस अध्ययन में हम इस पर विचार करेंगे।

प्रभु यीशु मसीह

उनके नाम में तीन भाग हैं जो उनके पद, उद्देश्य और स्थान को प्रकट करते हैं: प्रभु यीशु मसीह *(इफिसियों 1:3)।*

प्रभु (LORD): इस शब्द का उपयोग पुराने नियम में परमेश्वर के लिए किया गया है (भजन संहिता 97:5)। नए नियम में जब यही पद यीशु को दिया जाता है, तो उन्हें परमेश्वर के अधिकार को साझा करने वाले स्थान पर ऊँचा उठाया जाता है *(लूका 2:11)। [फ़िलिप्पियों 2:6-11 और यशायाह 45:22-25 की तुलना करें]।*

यीशु (JESUS): इसका अर्थ है "यहोवा ही उद्धार है" *(मत्ती 1:21)।*

मसीह (CHRIST): इसका अर्थ है "मसीहा" या "अभिषिक्त" (Anointed)। यह परमेश्वर के ठहराए हुए सेवक/प्रबंधक के रूप में उनके बुलावे को दर्शाता है। वह परमेश्वर द्वारा अलग किए गए व्यक्ति हैं ताकि वे परमेश्वर के नाम में उनके कार्य करें और उनके उद्देश्यों को पूरा करें *(दानिय्येल 9:25-26; मत्ती 16:16)।*

मसीह के व्यक्तित्व का सारांश

प्रभु यीशु मसीह के बारे में बाइबल जो सिखाती है, उसका सारांश यह है: उनके व्यक्तित्व (स्वरूप) में

ईश्वरीय और मानवीय - ये दो स्वभाव एक साथ मिले हुए हैं।

या ईस्वी सन् 325 में एक मसीही सभा (परिषद) में लिखे गए निकीया के विश्वास-अंगीकार (Nicene Creed) की भाषा में कहें तो: "वह परमेश्वर से परमेश्वर, ज्योति से ज्योति, और सच्चे परमेश्वर से सच्चे परमेश्वर हैं। वह बनाए हुए (सृष्ट) नहीं हैं, बल्कि जनमे हुए हैं। वह पिता के साथ एक ही सत्ता (तत्व) के हैं; उन्हीं के द्वारा सब कुछ रचा गया। हम मनुष्यों के लिए और हमारे उद्धार के लिए वह स्वर्ग से उतरे, और पवित्र आत्मा के द्वारा कुँवारी मरियम से देह धारण करके मनुष्य बने।"

चूँकि वह पूरी तरह से परमेश्वर और साथ ही पूरी तरह से मनुष्य हैं (यह एक ऐसा रहस्य है जिसे स्वर्गदूत भी पूरी तरह नहीं समझ सकते, *1 पतरस 1:10-12)*, इसलिए केवल वही परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ (बिचवई) हो सकते हैं; वह ईश्वरीयता और मानवता को आपस में जोड़ते हैं।

प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर हैं।

बाइबल हमें यह विश्वास करने के कई कारण देती है कि यीशु पूर्ण परमेश्वर हैं।

1) उन्हें वे नाम और पदवियाँ (उपाधियाँ) दी गई हैं जो केवल परमेश्वर की हैं। विशेष रूप से, परमेश्वर का वाचा (प्रतिज्ञा) का नाम। पुराने नियम और नए नियम में 'प्रभु' (LORD) जो बड़े अक्षरों में लिखा गया है, वह उन्हीं के बारे में है। पुराने नियम में जो नाम केवल परमेश्वर को दिया गया है *(गिनती 21:5-7; यशायाह 45:5)*, आने वाले समय में उसे किसी के द्वारा साझा किए जाने की भविष्यवाणी की गई थी *(यिर्मयाह 23:5-6)*। नए नियम में यह नाम यीशु को दिया गया है *(यूहन्ना 12:37-41; 1 कुरिन्थियों 12:3)*।

2) उन्हें स्पष्ट रूप से परमेश्वर कहा गया है (यूहन्ना 1:1; तीतुस 2:13। [यह भी देखें: 1 यूहन्ना 5:20; रोमियों 9:5; फ़िलिप्पियों 2:6; इब्रानियों 1:1-3; कुलुस्सियों 2:9])।

3) वे गुण (सिद्धताएँ) जो केवल परमेश्वर के हैं, यीशु में भी पाए जाते हैं, उदाहरण के लिए:
   - ➢ प्रथम और अंतिम (नित्यता): यशायाह 44:6; प्रकाशितवाक्य 1:17-18, 22:13।
   - ➢ पूर्व-अस्तित्व, अनादि (जिसकी कोई शुरुआत न हो), नित्य जनमा हुआ:

- सृष्टिकर्ता: *यूहन्ना 1:3*।
- *[*यीशु में पाई जाने वाली परमेश्वर की और भी सिद्धताओं को देखने के लिए इन वचन-भागों को देखें: *मलाकी 3:6 और इब्रानियों 13:8, अपरिवर्तनीय (न बदलने वाला); मत्ती 28:18, सर्वशक्तिमान; मरकुस 2:5-7,* पापों को क्षमा करने वाला; *प्रेरितों के काम 2:27 और यशायाह 43:14-16, पवित्र जन]*।

4) ऐसे कार्य जिन्हें करने का अधिकार और सामर्थ्य केवल परमेश्वर के पास है, वे यीशु को भी दिए गए हैं: वह जीवन देने वाला है *(यूहन्ना 5:20-23; यूहन्ना 10:28), और वह सब मनुष्यों का न्याय करेगा (2 कुरिन्थियों 5:10)*।
5) जिस आराधना के बारे में पवित्रशास्त्र कहता है कि वह केवल परमेश्वर को ही दी जानी चाहिए *(प्रकाशितवाक्य 22:8-9)*, वह मसीह को भी दी जाती है *(यूहन्ना 20:26-28; प्रकाशितवाक्य 5:12; इब्रानियों 1:6)*।

पवित्रशास्त्र की गवाही के अनुसार और विश्वास-अंगीकारों की भाषा में कहें तो, प्रभु यीशु मसीह पिता के साथ एक ही स्वभाव (सत्ता) वाले हैं; वह उनके समान, नित्य और जनमे हुए हैं, न कि बनाए (सृष्ट किए) गए। वह परमेश्वर हैं।

प्रभु यीशु मसीह मनुष्य हैं

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि प्रभु यीशु मसीह पूर्ण मनुष्य हैं *(यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 2:14)*।

उन बातों के बारे में सोचें जो हमें वास्तविक मनुष्य बनाती हैं। मसीह की मानवता लगभग हर बात में हमारी मानवता के समान है, उदाहरण के लिए:

- उनका एक भौतिक (शारीरिक) शरीर है *(मत्ती 26:26-28)*।
- उनकी ईश्वरीय चेतना से अलग, उनकी एक समझदार (विवेकपूर्ण) आत्मा है *(मत्ती 26:38)*। (यीशु मनुष्य के शरीर में केवल ईश्वरीय आत्मा नहीं हैं; वह पूर्ण मनुष्य हैं, हमारी तरह शरीर और आत्मा वाले)।

- उनमें स्वाभाविक मानवीय भावनाएँ हैं, इसलिए दूसरों के स्वभाव और व्यवहार से वह प्रभावित (द्रवित) होते हैं *(यूहन्ना 11:33-35)।*
- जैसे सब मनुष्य जन्म लेते हैं, वैसे ही वह एक साधारण स्त्री से जन्मे *(गलातियों 4:4)।*

हर रीति से, शुरुआत के आदम की तरह, और अब तक हुए तथा आगे होने वाले सभी मनुष्यों की तरह वह एक वास्तविक (सच्चे) मनुष्य थे। फिर भी, पाप के बाद आए अन्य मनुष्यों से वह कुछ बातों में अलग हैं:

- हमसे अलग, वह किसी मनुष्य के द्वारा नहीं बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आए, और एक कुँवारी से जन्मे *(मत्ती 1:20-23)।*
- हमसे अलग, जन्म से उनमें कोई पाप का स्वभाव नहीं था, और उन्होंने पूरी तरह से निष्पाप जीवन बिताया *(इब्रानियों 4:15)।*
- हमसे अलग, उनकी मानवता (मनुष्यत्व) उनकी ईश्वरीयता से जुड़ी हुई है; इसलिए यद्यपि इन दोनों स्वभावों में अंतर समझा जा सकता है, फिर भी वे अब और सदा के लिए एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते *(इब्रानियों 7:23-25)।*

[ध्यान दें: मध्यस्थ के रूप में प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं को पिता के अधीन कर दिया *(1 कुरिन्थियों 15:22-28)*, फिर भी अपनी पूर्ण ईश्वरीयता में (जो वे हमेशा से थे और सदा रहेंगे), वे बिल्कुल भी छोटे नहीं हैं; वे पिता और आत्मा के साथ अनादि काल से अनंत काल तक पूरी तरह से समान बने रहते हैं *(यूहन्ना 1:1, 2, 14; फ़िलिप्पियों 2:6)।]*

मसीह को परमेश्वर क्यों होना चाहिए?

पाप की मानवीय समस्या बहुत गंभीर है, इसलिए निम्नलिखित बातों के लिए एक ईश्वरीय उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी।

- पर्याप्त मूल्य का बलिदान चढ़ाने के लिए *(भजन संहिता 49:7-9)।*
- पापियों का उद्धार करने के लिए परमेश्वर के क्रोध को सहने के लिए *(1 यूहन्ना 4:10)।*
- अपने उद्धार के कार्य का फल मनुष्यों (स्त्री-पुरुषों) को प्रदान करने के लिए *(इब्रानियों 7:25-28)।*

उन्हें मनुष्य क्यों होना पड़ा?

क्योंकि पाप मनुष्यों का काम है, इसलिए उसका दंड एक मनुष्य को ही सहना था *(इब्रानियों 2:14-17)।*

एक ही व्यक्तित्व में दो अनोखे स्वभाव

प्रभु यीशु मसीह पूर्ण परमेश्वर हैं। वे पिता के समान हैं और पिता के समान ही स्वरूप (स्वभाव) वाले हैं। उसी प्रकार वे पूर्ण गुणों वाले मनुष्य भी हैं; हमारा मन, आत्मा, देह और लहू उनमें है। वे एक ही व्यक्तित्व में दो स्वभाव वाले हैं। ये स्वभाव आपस में मिलते या बदलते नहीं हैं, फिर भी इन्हें कभी अलग नहीं किया जा सकता।

यह समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि वह दो व्यक्ति नहीं, बल्कि केवल एक ही व्यक्ति है। जब वह कार्य करता है, तो एक व्यक्ति के रूप में कार्य करता है (कोई 'स्वभाव' कुछ नहीं कर सकता, केवल एक 'व्यक्ति' ही कर सकता है)। यही बात उन्हें हम जैसे पापियों का उद्धारकर्ता बनने के लिए पूरी तरह योग्य और पर्याप्त बनाती है *(इब्रानियों 9:23-28)।*

[ध्यान दें: कलीसिया के इतिहास में मसीह के बारे में कई गलत शिक्षाएँ रही हैं, और आज भी कई मौजूद हैं। उदाहरण के लिए: 'एरियनवाद' (Arianism) जो कहता है कि यीशु मनुष्य हैं लेकिन पूर्ण परमेश्वर नहीं (यहोवा के साक्षी और मॉर्मन लोग यह विचार रखते हैं); 'ज्ञानवाद' (Gnosticism) जो कहता है कि यीशु परमेश्वर हैं लेकिन वास्तविक मनुष्य नहीं (कुछ क्वेकर सिद्धांतकार)]।

इस उद्धारकर्ता के जीवन के बारे में विचार करें:

- उनका जन्म (मत्ती 1:18-25)।
- उनके उपदेश और चमत्कार (मत्ती 4:23-25 और 7:28-29)।
- उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान (मत्ती 27:45-50 और 28:1-8)।

बैपटिस्ट बाइबल अध्ययन से:

"परमेश्वर के चुने हुए लोगों का एकमात्र छुड़ाने वाला (उद्धारकर्ता) प्रभु यीशु मसीह है। परमेश्वर का नित्य पुत्र होकर वह मनुष्य बना, और इस प्रकार वह दो अलग-अलग स्वभावों में और एक ही व्यक्तित्व में सदा के लिए परमेश्वर और मनुष्य बना रहता है।" (प्रश्न 24)

प्रश्न

1) बाइबल से ऐसे तीन वचन-भाग लिखें जो यह साबित करते हैं कि यीशु परमेश्वर हैं। यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
2) ऐसे तीन वचन-भाग लिखें जो यह साबित करते हैं कि वह पूर्ण मनुष्य हैं। यह क्यों आवश्यक था, बताइए।
3) वह दो व्यक्ति हैं या एक ही व्यक्ति? इसका क्या महत्व (प्रसंगता) है? कलीसिया ने उनका वर्णन किस प्रकार किया है? निकिया के विश्वास-अंगीकार (Nicene Creed) के शब्द लिखें।

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ मसीह को जानना (Knowing Christ) - मार्क जोन्स (बैनर ऑफ ट्रूथ)
- ✓ यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों हैं (Jesus is both God and man) - स्टुअर्ट ओलीयॉट (इवेंजेलिकल प्रेस)

अध्ययन 4: मनुष्य: हमारा वास्तविक स्वभाव

आप मानवजाति को किस रूप में देखते हैं? क्या हम बुनियादी तौर पर अच्छे हैं, या बिल्कुल बुरे? अपने बारे में सच्चाई जानना सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक है। जैसा कि जॉन केल्विन ने कहा, "हमारे बारे में सही ज्ञान हमारे आत्म-विश्वास को समाप्त कर देता है।"

चूँकि परमेश्वर ने मानवजाति को रचा है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक गरिमा और मूल्य है।

परमेश्वर के स्वरूप में रचा जाने के कारण, हममें से हर एक परमेश्वर की समानता में है। यह हमें पशुओं से श्रेष्ठ बनाता है, और कुछ अर्थों में स्वर्गदूतों से भी बढ़कर। मनुष्य जंगल में रहने वाले पशुओं की तरह नहीं है, बल्कि स्वर्ग में रहने वाले सृष्टिकर्ता की तरह है। जहाँ आधुनिक विकासवादी सिद्धांत मनुष्य को नीचा दिखाते हैं, वहीं बाइबल की रचना की शिक्षा हमें परमेश्वर के स्तर तक उठाती है *(उत्पत्ति 1:26-27, 31)*। हमेशा याद रखें, मनुष्य का सबसे निकटतम रिश्तेदार बंदर नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर ही है।

परमेश्वर के स्वरूप में रचा जाना का क्या अर्थ है?

इसे हमारे व्यक्तित्व, नैतिक समझ (पहचान), निर्णय लेने की क्षमता, और अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करने की योग्यता में देखा जा सकता है *(कुलुस्सियों 3:10; इफिसियों 4:24; उत्पत्ति 1:26-28; उपदेशक 7:29; याकूब 3:9)*। (पाप करने के बाद गिरे हुए मनुष्य में भी इस स्वरूप के अवशेष मौजूद हैं)। *[1 यूहन्ना 4:7-11].*

आज भी, पतन के बाद भी, परमेश्वर की तरह मनुष्य के पास नित्यता और आध्यात्मिकता है। मनुष्य सोच सकता है, सही और गलत को पहचान सकता है, अपनी इच्छा से निर्णय ले सकता है, रचनात्मक कार्य कर सकता है, और प्रेमपूर्ण संबंधों में जुड़ सकता है।

आज हम इस विचार को कैसे व्यावहारिक रूप में लागू कर सकते हैं?

इसे कैसे लागू किया जाए, इसके बाइबल में कई उदाहरण दिए गए हैं।

उत्पत्ति 9:5-6: हम सभी परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, इसलिए जीवन की शुरुआत से लेकर अंत तक गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक — हर किसी में गरिमा और मूल्य है। पिछले 150 वर्षों में, विकासवाद के सिद्धांत पर आधारित जीवन-दर्शन ने गर्भपात, वंश-सुधार (eugenics), और इच्छामृत्यु (euthanasia) जैसी क्रूरताओं को बढ़ावा दिया है।

मनुष्य अपनी प्रारंभिक अवस्था में अमर (मृत्यु-रहित), पवित्र, सिद्ध, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में समर्थ था *(उत्पत्ति 1:31; [इफिसियों 4:24])*।

यह सब क्यों बदल गया?

अदन की वाटिका में परमेश्वर ने आदम के साथ एक वाचा (प्रतिज्ञा) बाँधी थी। इसके माध्यम से मनुष्य परमेश्वर के साथ संबंध बनाए रख सकता था। वह वाचा सरल थी, और परमेश्वर ने स्पष्ट कहा था कि यदि इसे तोड़ा गया तो इसका परिणाम निश्चित होगा *(उत्पत्ति 2:16-17)*।

परंतु दुर्भाग्य से, आदम और हव्वा ने उस आज्ञा का उल्लंघन किया। इसका परिणाम मानवजाति के लिए भयानक था *(उत्पत्ति 3:1-24)*।

पतन के परिणाम क्या थे?

1) टूटे हुए रिश्ते:

- मनुष्यों के बीच शर्म *(उत्पत्ति 3:7, 11-13)*।
- परमेश्वर के सामने अपराधबोध *(उत्पत्ति 3:8-10)*।

2) परमेश्वर का श्राप:

- सृष्टि संघर्षों की भट्ठी बन जाती है *(उत्पत्ति 3:14-15)*।
- संसार में जीवन पीड़ा और संकटों से भर जाता है *(उत्पत्ति 3:16)*।
- भूमि मनुष्य के विरुद्ध हो जाती है और जीवन को कठिन बना देती है *(उत्पत्ति 3:17)*।

फिर भी, वाचा तोड़ने के कारण परमेश्वर ने जब मनुष्य को श्राप दिया, तब भी परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की। वह उद्धारकर्ता अनुग्रह की एक नई वाचा स्थापित करेगा और आदम द्वारा खोई हुई हर चीज़ को पुनः प्राप्त (बहाल) करेगा। (उत्पत्ति 3:15; गलातियों 4:4-5)।

यह बात क्यों महत्वपूर्ण है कि आदम इतिहास में जीवित एक मनुष्य था और उसका पाप वास्तविक था?

परमेश्वर आदम को मानवजाति के प्रतिनिधि प्रधान के रूप में देखता है। उसने पाप किया और गिर गया; तब से पूरी मानवजाति पापी ठहराई गई, और उसका पाप का स्वभाव सब में फैल गया। परंतु, जैसे आदम "पुराणी" मानवजाति का प्रधान है, वैसे ही मसीह "नई" मानवजाति का प्रधान है। उनमें (मसीह में) हम पवित्र ठहराए जा सकते हैं *(रोमियों 5:12-21)*।

पाप क्या है?

इसे परमेश्वर के संबंध (संदर्भ) में देखा जाना चाहिए। परमेश्वर के उद्देश्य से चूक जाना, परमेश्वर की व्यवस्था (कानून) का उल्लंघन करना, जो परमेश्वर ने आज्ञा दी है उसे न करना, और परमेश्वर पर विश्वास न रखना ही पाप है *(रोमियों 3:23; 1 यूहन्ना 3:4; याकूब 4:17; रोमियों 14:23)*।

पाप हममें निम्नलिखित प्रभाव उत्पन्न करता है:

1) हम आत्मिक रूप से मरे हुए हैं, इसलिए हम परमेश्वर के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकते *(इफिसियों 2:1-3; रोमियों 8:5-8; यूहन्ना 6:44; 1 कुरिन्थियों 2:14)*।
2) स्वभाव से हम पापी हैं; हमारा हृदय पाप से भरा (पापपूर्ण) है, इसलिए हम पाप करते हैं *(यिर्मयाह 17:9; [मत्ती 15:16-20])*।
3) बिना किसी अपवाद के हम सभी पापी हैं *(रोमियों 3:23)*।

पाप के परिणाम:

- पापी पर परमेश्वर का क्रोध *(यूहन्ना 3:36)*।
- मृत्यु *(रोमियों 6:23)*।
- अनन्त दंड *(मत्ती 25:46; [2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10])*।

इसलिए पाप विनाश, अपराध-बोध, न्याय और मृत्यु उत्पन्न करता है। यह हमारे स्वभाव के हर पहलू को प्रभावित करता है। हमारे सबसे अच्छे काम भी पाप से दूषित हैं *(यशायाह 59:1-4, 64:6)*। इसे कभी-कभी "पूर्ण भ्रष्टता" (total depravity) कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम जितने बुरे हो सकते हैं उतने बुरे हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि हम जो कुछ भी करते हैं वह किसी न किसी रूप में पाप से दूषित है।

पाप में हम असहाय और आशाहीन हैं। यदि हमें उद्धार पाना है, तो परमेश्वर की सहायता आवश्यक है। हमारे पास सामर्थ्य नहीं है; हमें परमेश्वर की भलाई और दया पर पूरी तरह निर्भर रहना होगा जो हमें बचा सकती है *(मरकुस 10:26-27; रोमियों 5:6-8; [इफिसियों 2:1-10; इब्रानियों 7:25])*।

यदि आप यह पहचानते हैं कि आप पापी हैं और इससे व्याकुल (अशांत) हैं, तो देखिए कि बाइबल क्या कहती है कि आपको क्या करना चाहिए *(2 कुरिन्थियों 7:10; प्रेरितों के काम 16:29-31; [यूहन्ना 3:16-21])*।

यदि परमेश्वर ने हमें बचाया है, तो हमें नम्र होकर धन्यवादी (कृतज्ञ) होना चाहिए। हमारे पास खुद पर घमंड करने का कोई कारण नहीं है *(1 कुरिन्थियों 1:27-31)*।

बैपटिस्ट बाइबल अध्ययन से:

"परमेश्वर ने मनुष्य को पुरुष और स्त्री करके अपने स्वरूप में, ज्ञान, धार्मिकता और पवित्रता में रचा, और सब सृष्टियों पर अधिकार प्रदान किया।" (प्रश्न 13)

प्रश्न

1) मनुष्य शुरुआत में कैसे रचा गया था? आज जीवन में इसके क्या व्यावहारिक अर्थ हैं?
2) पाप क्या है? उसने मानवजाति को कैसे प्रभावित किया है?
3) पाप के दास होने के कारण मनुष्य परमेश्वर के पास (निकट) आने की न तो इच्छा रखते हैं और न ही समर्थ हैं, ऐसा बाइबल कहती है। यदि ऐसा है, तो क्या पापियों को मसीह के बारे में बताने का कोई अर्थ है? क्या वे अपने द्वारा किए जाने वाले पाप के लिए वास्तव में स्वयं ही जिम्मेदार (उत्तरदायी) हैं?

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *मनुष्य का मसीही दृष्टिकोण (The Christian View of Man)* - जे. ग्रेशम मेचन (बैनर ऑफ ट्रूथ)
- ✓ *विश्वास करने के लिए तैयार (Willing to Believe)* - आर. सी. स्प्राउल (बेकर पब्लिशिंग हाउस)

अध्ययन 5: उद्धार में परमेश्वर का कार्य

'**पा**पियों का उद्धार करता है' यह वाक्यांश इस बात की बाइबल की शिक्षा का सार है कि परमेश्वर पाप में फँसे लोगों को कैसे बचाता है। परमेश्वर उद्धार करता है। उसने मसीह को भेजा। वह मनुष्यों को मसीह के पास बुलाता है। उसने केवल पापियों को बचने का एक मार्ग ही नहीं दिखाया, बल्कि वह वास्तव में पुरुषों और स्त्रियों का उद्धार करता है *(गलातियों 4:3-7)*।

वह यह अनुग्रह की वाचा के अनुसार करता है। जगत् की उत्पत्ति से पहले ही यह वाचा बनाई गई थी और सुसमाचार के द्वारा इसे प्रगट किया गया। द्वितीय लंदन विश्वास-अंगीकार *(अध्याय 7, अनुच्छेद 2)* में इसे इस प्रकार समझाया गया है: "जब मनुष्य अपने पतन के कारण व्यवस्था के श्राप के अधीन हो गया, तो प्रभु ने अनुग्रह की एक वाचा बाँधना प्रसन्न किया। इसके द्वारा वह यीशु मसीह के माध्यम से पापियों को जीवन और उद्धार सेंत-मेंत में देने की प्रतिज्ञा करता है।" इसका अर्थ यह है कि संपूर्ण उद्धार परमेश्वर का ही कार्य है *(2 तीमुथियुस 1:8-9; योनह 2:9)*।

परमेश्वर उद्धार क्यों करता है?

परमेश्वर पापियों को इसलिए नहीं बचाता कि उसने उनमें कोई भलाई देखी, या इसलिए कि वे 'प्यारे और स्नेह योग्य दुष्ट' हैं; इसके विपरीत, वह प्रतिदिन पापियों पर क्रोध करता है; स्वभाव से सब पापी हैं *(रोमियों 3:23; भजन संहिता 7:11)*।

इसके बजाय, वह इसलिए पापियों को बचाता है क्योंकि वह भला, दयालु, प्रेम करने वाला और अनुग्रहकारी है *(यूहन्ना 3:16; तीतुस 2:11)*। अपने अनुग्रह की महिमा के लिए, उसने उन लोगों का उद्धार करने का निर्णय लिया जिन्हें उसने (वाचा की दया से) पहले से ठहराया था *(इफिसियों 1:4-6)*।

यदि परमेश्वर उद्धार करने की योजना बनाता है, तो क्या वह असफल होगा?

प्रभु के पास अपने चुने हुए लोगों के प्रति वाचा के प्रेम सहित, जगत् की उत्पत्ति से पहले बनाई गई अपनी

योजनाओं को पूरा करने की सामर्थ्य और दृढ़ निश्चय है *(इफिसियों 1:11; भजन संहिता 33:11; [भजन संहिता 135:6; तीतुस 1:1-3])।*

क्या मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा से परमेश्वर की योजनाओं में बदलाव आ सकता है?

पवित्र शास्त्र (बाइबल) यह दिखाता है कि पापी आत्मिक रूप से निर्बल (असमर्थ) है (उदाहरण के लिए: *यूहन्ना 6:44-45; [इफिसियों 2:1-10]*)। वह जो कुछ करता है उसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी है, फिर भी उसका स्वभाव पापपूर्ण होने के कारण, वह परमेश्वर का विरोध करना ही पसंद करता है *(रोमियों 8:7-8)।* परमेश्वर के सार्वभौम अनुग्रह से मिलने वाला नया स्वभाव ही उसकी एकमात्र आशा है *(इफिसियों 2:12-13; 2 कुरिन्थियों 5:17)।*

परमेश्वर कैसे उद्धार करता है?

अनुग्रह की वाचा के अनुसार, मसीह में उद्धार पाने के लिए वह कुछ लोगों को पहले से ठहराता है (पूर्वनिर्धारित करता है) *(1 पतरस 1:2; रोमियों 8:28-30; [यूहन्ना 17:4-12; इफिसियों 1:5-11])।*

परमेश्वर यह निर्णय ले सकता था कि वह किसी का भी उद्धार न करे, या वह सबका उद्धार करने का निर्णय ले सकता था। क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो उद्धार के योग्य हो। इसके विपरीत, सभी पापी परमेश्वर को नकारना (अस्वीकार करना) ही चुनते हैं। केवल उसके अनुग्रह के कारण ही किसी को प्रभावकारी रूप से बुलाया जाता है *(2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 1 पतरस 2:7-10; मत्ती 11:27; [1 थिस्सलुनीकियों 1:4, 5:9; मत्ती 24:22-24, 31])।*

उद्धार परमेश्वर की अपनी स्वेच्छा का प्रेम है; कौन विश्वास करेगा यह पहले से देखकर उसने उनका उद्धार नहीं किया *(देखिए: रोमियों 9:6-24; [साथ ही रोमियों 10:20; रोमियों 11:5-6])।*

परमेश्वर के साथ वाचा की सहभागिता में एक व्यक्ति को लाने वाला मसीह पर विश्वास भी पिता द्वारा अपनी संतान को दिया गया अनुग्रह का दान है (*प्रेरितों के काम 13:48; फिलिप्पियों 1:29*)। विश्वास से उत्पन्न होने वाले भले काम भी सार्वभौम अनुग्रह के कारण ही संभव होते हैं *(इफिसियों 2:8-10)।*

इस सत्य के प्रति सही प्रतिक्रिया क्या है?

आश्चर्य, नम्रता, भरोसा, प्रेम, धन्यवाद और स्तुति ही इसके प्रति सही प्रतिक्रिया है *(रोमियों 11:33-36; 1 कुरिन्थियों 1:26-31)। यह उद्धार का आश्वासन भी प्रदान करता है (फिलिप्पियों 1:6; इफिसियों 1:13-14)।*

इसलिए, उद्धार परमेश्वर के चुनाव पर आधारित है; यह परमेश्वर के सार्वभौम अनुग्रह पर निर्भर करता है। उद्धार पाना है या नहीं, यह तय करना मनुष्य की इच्छा नहीं, बल्कि अंततः परमेश्वर की इच्छा है। परमेश्वर की दया के लिए नम्रतापूर्वक उस पर निर्भर रहना ही इसके प्रति एकमात्र सही प्रतिक्रिया है।

अक्सर उठने वाली कुछ आपत्तियाँ:

1. क्या मनुष्य एक रोबोट (यंत्रमानव) की तरह पहले से प्रोग्राम किया गया है?

नहीं, मनुष्य अपने द्वारा चुने गए कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार (उत्तरदायी) है। अपने स्वभाव के कारण, वह परमेश्वर की सेवा करने की बजाय पाप की गुलामी को स्वेच्छा से चुनता है। परमेश्वर कभी भी किसी पापी को पाप करने के लिए मजबूर नहीं करता *(यूहन्ना 8:34; [रोमियों 6:16-23])।*

2. फिर क्या आशा है – कौन उद्धार पा सकता है?

यदि परमेश्वर अपनी दया से पापियों को न बुलाए, और उन्हें नया जीवन देकर उनके मन को स्वतंत्र न करे, तो वे उद्धार की खोज नहीं करेंगे। परंतु जब परमेश्वर ऐसा करता है, तो वे अपनी स्वेच्छा से मसीह के पास आ सकते हैं *(यूहन्ना 6:36-45; [यूहन्ना 3:1-15])।*

3. क्या बाइबल में यह नहीं कहा गया है कि "कोई भी आ सकता है"?

यह सच है। यदि कोई आना चाहता है, तो वह मसीह के पास आ सकता है; मसीह उसे कभी बाहर नहीं निकालेगा *(यूहन्ना 6:37; यूहन्ना 3:16)*। मन फिराना (पश्चाताप करना) सभी का कर्तव्य है *(प्रेरितों के काम 17:30)।* फिर भी, हम अपने आप नहीं आएँगे और न ही विश्वास करेंगे, क्योंकि कोई परमेश्वर की

खोज करने वाला नहीं है (रोमियों 3:9-18)।

4. एक अविश्वासी को क्या करना चाहिए: चुने जाने का इंतज़ार करना चाहिए या अभी मसीह के पास आना चाहिए?

उसे अभी ही मसीह के पास आना चाहिए। यदि उसे लगता है कि वह नहीं आ सकता, तो उसे आ सकने के लिए पवित्र आत्मा के अनुग्रह की प्रार्थना करनी चाहिए *(मत्ती 11:28; 2 कुरिन्थियों 6:2; रोमियों 8:9-11)*।

5. क्या हमें सब लोगों को सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए?

हाँ। परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों के लिए उद्धार और उसे संभव बनाने वाले साधन (सुसमाचार का प्रचार) दोनों निश्चित किए हैं। *रोमियों 10:8-17* में देखें जहाँ पौलुस प्रचारकों को भेजने के बारे में बताता है, और *मत्ती 28:18-20* में मसीह द्वारा दी गई महान आज्ञा को देखें।

दूसरी लंदन बैपटिस्ट अंगीकार (2LCF) से:

पूर्वनिर्धारण के इस उच्च रहस्य को बहुत ही सावधानी से संभाला जाना चाहिए। जो लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, उन्हें अपने अनन्त चुनाव का निश्चय प्राप्त होगा। यह शिक्षा परमेश्वर की स्तुति करने, उसका भय मानने, उसकी आराधना करने, नम्र बने रहने, और सुसमाचार का पालन करने वालों को बड़ा ढाढस (सांत्वना) देने का कारण बनेगी। (2LCF अध्याय 3, अनुच्छेद 7)

प्रश्न

1) पापियों को उद्धार के लिए चुनने में परमेश्वर की सार्वभौमिकता (परम अधिकार) का सत्य, विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए बड़ा ढाढस (सांत्वना) कैसे बनता है, इसकी व्याख्या करें।
2) परमेश्वर के सार्वभौम चुनाव और मनुष्य की जिम्मेदारी (उत्तरदायित्व) को आप कैसे समझाएंगे? सहायता के लिए इन पदों (आयतों) को देखें: *यहेजकेल 18:30-32; यूहन्ना 6:37-40, 43-48, 60-65*।
3) यदि कोई मित्र पूछे, "मैं कैसे उद्धार पा सकता हूँ?", तो आप क्या उत्तर देंगे?

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *परमेश्वर की सार्वभौमिकता (The Sovereignty of God)* - आर्थर डब्ल्यू. पिंक (बैनर ऑफ ट्रूथ)
- ✓ *पूरा किया गया और लागू किया गया उद्धार (Redemption Accomplished and Applied)* - जॉन मरे (बैनर ऑफ ट्रूथ)

अध्ययन 6: मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान

दो ऐतिहासिक घटनाएँ मसीही विश्वास का आधार हैं। पुराने नियम के लेखकों और स्वयं मसीह ने इसके बारे में पहले ही बताया था *(यशायाह 53; मरकुस 8:31-32)।*

पिता परमेश्वर ने मसीह को क्यों भेजा?

परमेश्वर ने अपने लोगों का उद्धार करने के लिए, अपनी इच्छा (प्रसन्नता) के अनुसार, अपनी महिमा के लिए, और अपने वाचा के प्रेम तथा अनुग्रहकारी उद्देश्य से मसीह को भेजा *(कुलुस्सियों 1:19-20; 1 तीमुथियुस 1:14-17)।*

मसीह की मृत्यु क्यों आवश्यक थी?

1) परमेश्वर पाप से घृणा करता है। पाप परमेश्वर के धर्ममय (धार्मिक) क्रोध का कारण बनता है *(रोमियों 1:18; भजन संहिता 7:11)।*
2) परमेश्वर यह घोषणा करता है कि पाप हमेशा मृत्यु की ओर ले जाता है *(उत्पत्ति 2:17; रोमियों 6:23)।*
3) अपनी वाचा के अनुसार, परमेश्वर अपने लोगों के पापों के लिए लहू बहाने का बलिदान चढ़ाए जाने पर ही उन्हें क्षमा करता है *(इब्रानियों 9:19-24; लैव्यव्यवस्था 17:11)।*

क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने क्या पूरा किया?

- ***प्रायश्चित (Propitiation):*** *रोमियों 3:25* वह जिनके लिए मरा, उनके ऊपर से परमेश्वर के क्रोध को मसीह के बलिदानी मरण ने हटा दिया। "परमेश्वर ने उसे उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है" *(रोमियों 3:25)। [1 यूहन्ना 2:2, 1 यूहन्ना 4:10]*
- ***स्थानापन्न / बदले में बलिदान (Substitution):*** यीशु की मृत्यु एक बदले में दिया गया बलिदान था, जिसने पाप का समाधान किया। पापियों को परमेश्वर के निकट लाने के लिए वह उनके स्थान पर मरा। इस प्रकार परमेश्वर ने पापियों के साथ अपने संबंध को नया किया। लैव्यव्यवस्था 1:4 में, पापी के स्थान पर परमेश्वर एक पशु के बलिदान को स्वीकार करता

है। पुराना नियम यह भविष्यवाणी करता है कि परमेश्वर के लोगों के पाप मसीह पर लादे जाएँगे *(यशायाह 53:6)*। *यह नया नियम में पूरा हुआ (यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 2:24; इब्रानियों 9:28)*।

- **मेल-मिलाप (Reconciliation):**
  विरोध करने वाला पापी, जिसके साथ वह शत्रुता में था, उसी परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप प्राप्त करता है। मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता (सम्बन्ध) फिर से स्थापित होती है *(2 कुरिन्थियों 5:18-21; [इफिसियों 2:16; रोमियों 5:6-11])*।
- **छुड़ाव / छुटकारा (Redemption):**
  गुलामी में पड़े व्यक्ति को छुड़ाने के लिए जो कीमत (दाम) चुकाता है, वही छुड़ाने वाला है। यीशु ने कहा कि वह बहुतों के बदले अपना प्राण छुड़ौती के दाम में देने आया है *(मरकुस 10:45; [इफिसियों 1:7; रोमियों 3:24])*।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों को पाप के दोष और उसके अधिकार से छुड़ाने के लिए दाम चुका दिया गया है *(रोमियों 8:1-3; [गलातियों 4:4-5; गलातियों 3:13])*। क्या परमेश्वर का उद्देश्य असफल होगा? यदि पूरा दाम चुका दिया गया है, तो फिर कौन और अधिक दाम माँग सकता है? *(रोमियों 8:31-34)*।

मसीह की मृत्यु अपने लोगों के पापों के लिए कैसे पर्याप्त है?

1) मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं। वह परमेश्वर के दूसरे व्यक्ति हैं। उनके पास पिता के समान ही महिमा और समानता है। परमेश्वर होने के नाते, वह असीम मूल्य वाले, पवित्र और सार्वभौम (सर्वोपरि) हैं। उनका अस्तित्व स्वयं से ही है; वह किसी के भी ऋणी (कर्जदार) नहीं हैं। इसका अर्थ यह है कि, परमेश्वर-मनुष्य के रूप में वह जो कुछ भी करते हैं, उसका असीम मूल्य है *(फिलिप्पियों 2:6-11; इब्रानियों 1:1-4)*।

2) वह निष्पाप और सिद्ध महायाजक हैं। इसलिए परमेश्वर और मनुष्यों के बीच वह सबसे योग्य मध्यस्थ हैं *(इब्रानियों 9:11-14; इब्रानियों 7:23-28; 1 तीमुथियुस 2:5)*।

3) उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था (कानून) का पूरी तरह से पालन किया (गलातियों 4:4)। इस प्रकार वह जीवन प्राप्त करने के योग्य हुए *(मत्ती 19:17)*।

4) फिर, अपने पापी लोगों के लिए उन्होंने दंड सहन किया, और क्रूस पर मरकर वह पूरा दाम चुका दिया *(गलातियों 3:13; कुलुस्सियों 2:13-15)*।

5) इस प्रकार, उन्होंने अपने पापी लोगों के लिए अनन्त जीवन को मोल ले लिया (रोमियों 10:4; यूहन्ना 17:3)।

उनकी (मसीह के) मृत्यु से क्या हासिल हुआ

मसीह के मरने के कारण उसने सभी का उद्धार पूरा कर दिया। उसने छुड़ौती का दाम पूरी तरह से चुका दिया। अब और कोई कीमत (दाम) चुकाने के लिए नहीं बची है। प्रायश्चित, स्थानापन्न (बदले में बलिदान), और छुटकारा (छुड़ाव) जैसे बाइबल के शब्द उसके उद्धार की पूर्णता को दर्शाते हैं *(रोमियों 5:10, 18-19; रोमियों 8:31-32; इब्रानियों 9:12; यूहन्ना 17:21)*।

मसीह की मृत्यु अपने उद्देश्य को पूरी तरह से प्राप्त करती है। वह अपने लोगों का उद्धार करने के लिए पूरी तरह से समर्थ (पर्याप्त) है। क्या आपका उद्धार हुआ है? आप जैसे पापियों का उद्धार करने के लिए ही मसीह मरा। वह अभी ही आपको स्वीकार करने के लिए तैयार है *(1 तीमुथियुस 1:12-15; [मत्ती 1:21; यूहन्ना 10:11; प्रकाशितवाक्य 5:9])*।

मसीह का जी उठना (पुनरुत्थान)

यीशु मसीह मरा, और उसका शरीर कब्र में गाड़ा गया। जो शरीर मरा था, वही जी उठा और कब्र से बाहर आया। मृत्यु के समय आत्मा से अलग हुआ वही भौतिक (शारीरिक) शरीर पुनरुत्थान के बाद फिर से एक हो गया। यद्यपि वह महिमावान हुआ, फिर भी उसका स्वभाव वही भौतिक ही था। जो यीशु मरा था, वही जी उठा *(लूका 24:1-8, 36-48; 1 कुरिन्थियों 15:1-8)*।

1 कुरिन्थियों 15:1-8 में पौलुस द्वारा बताई गई बातों पर ध्यान दें:

- पवित्रशास्त्र (पवित्र शास्त्र)
- ऐतिहासिक प्रमाण
- गवाह (साक्षी)
- अपना व्यक्तिगत अनुभव

जी उठने (पुनरुत्थान) का क्या महत्व है?

- यह हमें बताता है कि मसीह वही हैं जो उन्होंने दावा किया था, और जो काम करने वह आए थे, उसे उन्होंने पूरा कर दिया है *(रोमियों 1:4; रोमियों 4:25; प्रेरितों के काम 2:24-26)।*
- मृत्यु और जी उठने का यह क्रम यह प्रगट करता है कि मसीह के साथ संबंध में एक मसीही के साथ क्या होता है *(रोमियों 6:1-9; 1 कुरिन्थियों 15:20-25; इफिसियों 1:18-20; 1 कुरिन्थियों 6:14)।*
- यह मसीहियों को यह भरोसा देता है कि एक दिन मसीह की तरह हमें भी जी उठा हुआ शरीर मिलेगा। यह हमें आशा और महिमा का निश्चय देता है *(फिलिप्पियों 3:20-21; 1 पतरस 1:3)।*

जी उठने के बाद, मसीह सशरीर (शरीर सहित) स्वर्ग पर उठा लिए गए। अंतिम दिन में महिमा के साथ लौटने तक, वह अपने लोगों के लिए वहाँ भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में सेवा करते हैं *(प्रेरितों के काम 1:4-11; इब्रानियों 1:1-4; यूहन्ना 14:25-26; इब्रानियों 9:24-26; फिलिप्पियों 2:9-11)।*

दूसरी लंदन बैपटिस्ट अंगीकार (2LCF) से:

प्रभु यीशु ने अपनी संपूर्ण आज्ञाकारिता और सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर को अर्पित किए गए बलिदान से, परमेश्वर के न्याय को पूरी तरह से संतुष्ट किया। उन्होंने मेल-मिलाप कराया, और पिता ने उन्हें जो लोग दिए थे, उन सभी के लिए स्वर्ग के राज्य में अनन्त मीरास (अधिकार) मोल ली। (2LCF अध्याय 8, अनुच्छेद 5)

प्रश्न

1) क्रूस पर क्या हुआ? वह आपके लिए कैसे लाभदायक सिद्ध हुआ?
2) मसीह शारीरिक रूप से जी उठे, इसके क्या-क्या प्रमाण (सबूत) हैं?
3) एक जीवित उद्धारकर्ता आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया (And They Crucified Him) - ऐलन एबनेज़र (इवोंजेलिकल प्रेस)*
- ✓ *क्रूस, उद्धार का परमेश्वर का मार्ग (The Cross, God's Way of Salvation) - डी. मार्टिन लॉयड-जॉन्स (गुड न्यूज़ पब्लिशर्स)*

अध्ययन 7: पवित्र आत्मा: उनका व्यक्तित्व और कार्य

'पवित्र आत्मा' शब्द सुनते ही आपके मन में क्या आता है? ईमानदारी से सोचें; अपने निष्पक्ष विचारों को जाँचें। पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और उनके कार्य को लेकर बहुत बड़ा भ्रम फैला हुआ है। हमारा अपना ज्ञान शायद पूरा न हो, इसलिए बाइबल वास्तव में क्या सिखाती है, यह हमें जाँचने की आवश्यकता है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं

वह परमेश्वर हैं, त्रिएक के तीसरे व्यक्ति हैं। पिता और पुत्र से निकलने वाले वह, अपनी पहचान और स्वभाव में उनके बिल्कुल समान हैं। वह केवल कोई ईश्वरीय शक्ति या ऊर्जा मात्र नहीं हैं। इसके लिए पवित्रशास्त्र के प्रमाण देखें:

1) उनका उल्लेख एक व्यक्ति के रूप में किया जाता है *(यूहन्ना 15:26; [यूहन्ना 16:13-15; इब्रानियों 3:7])।*
2) दूसरों के कामों से वह प्रभावित होते हैं *(प्रेरितों के काम 5:3; इफिसियों 4:30)।*
3) वह ऐसे काम करते हैं जो एक व्यक्ति ही कर सकता है *(लूका 12:12; [उत्पत्ति 1:2-3; यूहन्ना 16:13])।*
4) उनका नाम अन्य व्यक्तियों के साथ मिलाकर लिया जाता है *(यूहन्ना 16:14)।*
5) उनके पास व्यक्तिगत विशेषताएँ हैं *(1 कुरिन्थियों 2:10-11)।*
6) उन्हें उनकी अपनी सामर्थ्य (शक्ति) से अलग करके दिखाया जाता है *(लूका 4:14)।*

क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने क्या पूरा किया?

1) उनका उल्लेख परमेश्वर के रूप में किया जाता है *(1 कुरिन्थियों 3:16, 12:3; [प्रेरितों के काम 5:3-4])।*
2) ईश्वरीय काम उनसे जोड़कर बताए जाते हैं *(अय्यूब 33:4; [रोमियों 8:26])।*
3) पिता और पुत्र के साथ मिलकर ईश्वरीय स्वभाव की सारी परिपूर्णता उनके पास है। वह

अनन्त हैं *(इब्रानियों 9:14); सर्वव्यापी हैं (भजन संहिता 139:7); सर्वज्ञ हैं (यशायाह 40:12-14); सर्वशक्तिमान हैं — जो असंभव को भी कर सकते हैं (लूका 1:35)।*

4) वह त्रिएक के अन्य व्यक्तियों के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं *(मत्ती 3:16-17; मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14; [1 पतरस 1:2; इफिसियों 2:18, 3:14-19, 4:4-6])।*

पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से निकलते हैं

वह केवल एक व्यक्ति से नहीं, बल्कि पिता और पुत्र, इन दोनों व्यक्तियों से निकलते हैं *(यूहन्ना 15:26; रोमियों 8:9; गलातियों 4:6)।*

अथानासियन विश्वास-अंगीकार ऐसा कहता है: "पवित्र आत्मा न तो बनाए गए हैं, न रचे गए हैं, और न ही जन्मे हैं; वह पिता और पुत्र से निकलते हैं... इस त्रिएक में कोई आगे या पीछे नहीं है, न कोई बड़ा या छोटा है; तीनों व्यक्ति अनन्त काल से एक समान और बराबर हैं।"

पवित्र आत्मा का कार्य

1) मसीह ने विश्वासियों के लिए पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा की *(यूहन्ना 14:16-18, 25-26; [15:26, 16:7])।*
2) जैसा कि प्रतिज्ञा की गई थी, पिन्तेकुस्त के दिन उन्हें विशेष रूप से इस संसार में भेजा गया *(प्रेरितों के काम 1:4-5, 8, 2:1-4)।*
3) बाइबल से उनके कार्य को त्रिएक के संदर्भ में समझा जाना चाहिए: पिता योजना बनाते हैं, पुत्र उस योजना को पूरा करते हैं, और पवित्र आत्मा मसीह के कार्य को हमारे जीवन में लागू करते हैं। क्योंकि परमेश्वर एक ही हैं, इसलिए हर चरण में ये तीनों व्यक्ति आपस में मिलकर काम करते हैं *(रोमियों 8:9-11)।*

पवित्र आत्मा के कार्य के पहलू

- सृष्टि: *उत्पत्ति 1:1-3।*
- पवित्रशास्त्र की प्रेरणा (परमेश्वर का श्वास): *2 तीमुथियुस 3:15-17; [2 पतरस 1:19-21; यूहन्ना 16:13]।*
- मसीह की गवाही देना और उन्हें महिमा देना: *यूहन्ना 16:12-15।*
- पृथ्वी पर मसीह की सेवा में उन्हें सामर्थ्य देना: *लूका 1:35; मत्ती 3:16, 4:1, 12:28;*

[लूका 4:14, 18; यूहन्ना 3:34]।

- विश्वासी के जीवन में कार्य:
  - नया जन्म देना: *(यूहन्ना 3:1-8; [1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:14])।*
  - समझ और ज्ञान देना: *(1 कुरिन्थियों 2:4; [यूहन्ना 14:26, 15:26])।*
  - पवित्रता का फल उत्पन्न करना: *(गलातियों 5:22-26; 1 पतरस 1:2)।*
  - आराधना करने में सहायता करना: *(इफिसियों 5:18-20)।*
  - कलीसिया की उन्नति के लिए वरदान देना: *(1 कुरिन्थियों 12:4-7; [इफिसियों 4:7-14; 1 पतरस 4:10-11; रोमियों 12:6-8])।*
  - प्रार्थना में सहायता करना: *(इफिसियों 2:18; रोमियों 8:26)।*
  - [इन तरीकों से पवित्र आत्मा मसीह के कार्य को विश्वासियों के जीवन में लागू करते हैं। अनन्त महिमा प्राप्त करने तक वह उन पर छाप लगाकर, उन्हें पवित्र करके सुरक्षित रखते हैं (रोमियों 8:9-18)।]

विचार करने के लिए प्रश्न

1) क्या पवित्र आत्मा के बिना मसीही जीवन जिया जा सकता है? नहीं! आत्मा के बिना सच्चा जीवन नहीं है, और आप परमेश्वर को प्रसन्न भी नहीं कर सकते (रोमियों 8:9)।
2) क्या परमेश्वर का आत्मा मसीहियों के अंदर वास करता है? हाँ, वह उनमें वास करता है *(1 कुरिन्थियों 3:16, 6:18-20)।*
3) आप कैसे जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा ने आपको नया जन्म दिया है? वह मसीह में उद्धार के लिए विश्वास उत्पन्न करते हैं *(2 कुरिन्थियों 4:13; इफिसियों 2:8)।*
4) क्या सभी सच्चे मसीही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाए हुए हैं? हाँ! हर एक विश्वासी जब उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा करता है, तो वह पवित्र आत्मा को पूरी तरह से प्राप्त करता है *(1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:2-3, 14)।*
5) हम कैसे कह सकते हैं कि हमारे पास पवित्र आत्मा है? यह केवल भावनाएँ या शक्ति नहीं है, बल्कि मसीह में उद्धार देने वाला विश्वास है। यह जीवन में बदलाव लाता है *(गलातियों 3:14, 5:22-23; [2 पतरस 1:3-11])।*
6) क्या सभी मसीहियों के पास एक ही वरदान हैं? नहीं। वरदान किसी व्यक्ति की अपनी योग्यता के लिए नहीं, बल्कि कलीसिया के लाभ के लिए हैं। इसलिए आवश्यकता के अनुसार वे अलग-अलग होते हैं *(रोमियों 12:4-8; [1 कुरिन्थियों 12:7-11])।*

सारांश

पवित्र आत्मा नया जीवन देते हैं और मनुष्य को मसीह में विश्वास की ओर ले जाते हैं। वह उन्हें मसीह की देह (शरीर) का अंग बनाते हैं। वह विश्वासी में वास करते हैं और उस पर छाप लगाते हैं। जब पवित्र आत्मा विश्वासी में वास करते हैं, तो अनुग्रह और पवित्रता में उन्नति होती है। वह विश्वासी को सेवा के लिए सामर्थी बनाते हैं और कलीसिया के लाभ के लिए विभिन्न वरदान देते हैं।

दूसरी लंदन बैपटिस्ट अंगीकार (2LCF) से:

अच्छे काम करने की उनकी सामर्थ्य उनसे नहीं, बल्कि पूरी तरह से मसीह के आत्मा से है। यदि वे ऐसा कर सकें, तो उन्हें पहले से मिले अनुग्रह के अलावा, पवित्र आत्मा के विशेष कार्य की अति आवश्यकता है। वह उनमें कार्य करके परमेश्वर की इच्छानुसार चाहने और काम करने के लिए उन्हें समर्थ बनाते हैं। (2LCF अध्याय 16, अनुच्छेद 3)

प्रश्न

1) पवित्र आत्मा कौन हैं, लिखिए।
2) पवित्र आत्मा किस पर हमारा ध्यान केंद्रित करते हैं?
3) उन्होंने आपके जीवन में क्या किया है? उनके साथ आपका प्रतिदिन का संबंध कैसा है? *(रोमियों 8:12-17)।*

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *पवित्र आत्मा (The Holy Spirit)* - एडविन एच. पामर (पी एंड आर पब्लिशिंग)
- ✓ *पवित्र आत्मा का रहस्य (The Mystery of The Holy Spirit)* - आर. सी. स्प्राउल *(प्रकाशन गृह)*

अध्ययन 8: उद्धार देने वाला विश्वास

हमने पिता के चुनने वाले प्रेम, पुत्र के छुटकारे के कार्य, और उसे हमारे जीवन में लागू करने वाले पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में विचार किया है। अब आइए देखें कि विश्वासियों के रूप में हम पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। इसकी शुरुआत उद्धार देने वाले विश्वास (saving faith) से होती है, जो परमेश्वर का सबसे बड़ा दान है। एंग्लिकन कलीसिया (Anglican Church) ऐसा कहती है: "विश्वास का यह अनुग्रह, जिसके द्वारा चुने हुए लोग अपनी आत्माओं के उद्धार के लिए विश्वास करने के योग्य होते हैं, उनके हृदयों में मसीह के आत्मा का कार्य है" (अध्याय 14, अनुच्छेद 1)।

मन फिराव (पश्चाताप)

मन फिराव के द्वारा ही हम उद्धार देने वाले विश्वास का अनुभव करते हैं। इसका अर्थ है मुड़ना या अपनी दिशा बदलना। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से नए जन्म के द्वारा यह जीवन में एक पूरी तरह से बदलाव लाता है। यह मन फिराव और भले कामों की ओर ले जाता है। ये भले काम उद्धार देने वाले विश्वास का फल हैं *(इफिसियों 2:8-10; प्रेरितों के काम 11:15-18)*।

मन फिराव के द्वारा जीवन में आने वाला यह पूरा बदलाव बाइबल में कई बार देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए: *तरसुस का शऊल (प्रेरितों के काम 9:3-6) जेलर या दरोगा (प्रेरितों के काम 16:29-34) लूदिया (प्रेरितों के काम 16:14-15) [ज़कई, लूका 19:8-10; कुरनेलियुस, प्रेरितों के काम 10:44-48; मनश्शे, 2 इतिहास 33:1-17]*।

उद्धार देने वाला विश्वास

बैपटिस्ट प्रश्नोत्तरी (Baptist Catechism) का 91वाँ प्रश्न यह है: यीशु मसीह में विश्वास क्या है? उत्तर यह है: मसीह में विश्वास एक ऐसा उद्धार देने वाला अनुग्रह है, जिसके द्वारा हम उद्धार के लिए केवल यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं और केवल उन पर ही भरोसा रखते हैं, जैसा कि सुसमाचार में हमें दिया गया है।

विश्वास: सब कुछ छोड़कर मैं प्रभु पर भरोसा रखता हूँ

1) आप परमेश्वर, संसार, पाप, **स्वयं** (अपने आप) और मसीह के द्वारा मिलने वाले उद्धार के विषय में सत्य को जानते हैं *(इब्रानियों 11:1-6)*।

2) जैसा कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के द्वारा आप पर प्रगट किया है, आप मसीह के द्वारा उद्धार के सत्य पर **विश्वास** करते हैं *(2 तीमुथियुस 3:15; यूहन्ना 3:16, 18, 36; [प्रेरितों के काम 10:43; रोमियों 3:22; यूहन्ना 6:40])*।

3) पवित्रशास्त्र में आपने जिस मसीह को देखा है, उन पर आप पूरी तरह से विश्वास करते हैं, उन्हें अपने उद्धारकर्ता के रूप में **अंगीकार** करते हैं और अपना पूरा विश्वास केवल उन्हीं पर रखते हैं *(रोमियों 10:9-13; [यूहन्ना 5:24; यूहन्ना 6:47; प्रेरितों के काम 16:30-31])*।

यह उद्धार देने वाला विश्वास परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह से मिलने वाला वरदान (दान) है *(फिलिप्पियों 1:29; इफिसियों 2:8)*। क्या आपके पास यह है? क्या पवित्र आत्मा ने आप पर सत्य प्रगट किया है? क्या आपको इसकी सामर्थ्य का एहसास (निश्चय) हुआ है और क्या आप उद्धार के लिए केवल मसीह पर विश्वास कर पाए हैं? यदि नहीं, तो जब तक यह मिल न जाए तब तक चैन से न बैठें! पवित्र आत्मा के द्वारा मिलने वाले विश्वास के वरदान के लिए परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करें, और वह इसे आपको देगा *(लूका 11:9-13)*।

उद्धार देने वाले विश्वास के द्वारा हम मसीह और उनकी सभी आशीषों से जुड़ जाते हैं। मसीह के साथ इस एकता (मिलाप) का पहला फल पाप की गुलामी से छुटकारा पाना है *(रोमियों 6:1-11)*। बाइबल इसे 'जीवन के लिए मन फिराव' कहती है।

पश्चाताप (मन फिराव)

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि पश्चाताप (मन फिराव) उद्धार देने वाले विश्वास का फल है, न कि उसका आधार (बुनियाद)। परमेश्वर पहले विश्वास देते हैं, उसके बाद मन फिराव आता है। विश्वास प्राप्त करने से पहले मन फिराव कोई ऐसा 'भला काम' नहीं है जिसे हमें करना पड़ता है।

यही कारण है कि प्रश्नोत्तरी (Catechism) का 92वाँ प्रश्न (जीवन के लिए मन फिराव क्या है?) 91वें

प्रश्न (मसीह में विश्वास क्या है?) के बाद आता है। *इसका उत्तर यह है: 'जीवन के लिए मन फिराव' एक उद्धार देने वाला अनुग्रह है। जिसके द्वारा एक पापी अपने पाप के सच्चे एहसास और मसीह में परमेश्वर की दया को समझकर, अपने पापों पर दुखी होता है और उनसे घृणा करता है। इस प्रकार वह पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर आता है, और एक नई आज्ञाकारिता के साथ जीवन जीने का पक्का निश्चय (संकल्प) करता है।*

1) आप जानते हैं और अंगीकार करते हैं कि परमेश्वर के सामने आप एक पापी हैं। आप समझते हैं कि आपने उसकी व्यवस्था (नियम) को तोड़कर उसे दुख पहुँचाया है, और इसलिए आप दंड के योग्य हैं *(लूका 15:18-19; भजन संहिता 51:3-4)।*

2) मसीह में परमेश्वर की दया की ज्योति में आप अपने पाप को देखते हैं। आप यह महसूस करते हैं कि इसके बिना आपके लिए कोई आशा नहीं है *(निर्गमन 34:6-7; यिर्मयाह 3:22-23; योएल 2:12-14)।* [इस बात के एहसास के बिना हमारा दुख केवल सांसारिक (संसार का) ही होगा। यह केवल पाप के परिणामों पर शोक करना है, जो सच्चे विश्वास का फल नहीं है, *2 कुरिन्थियों 7:9-10]।*

3) आप अपने पाप पर सच्चा दुख (शोक) करते हैं; यह एक ऐसा दुख है जो घृणा में बदल जाता है। आप अपने पाप से और उससे परमेश्वर को होने वाली अप्रसन्नता (नाराज़गी) से घृणा करते हैं *(भजन संहिता 51:1-5; यहेजकेल 36:31)।*

4) पिता की पूरी क्षमा *(रोमियों 2:4, 4:6-8)*, पुत्र के द्वारा पूरी तरह से शुद्ध किए जाने *(प्रेरितों के काम 2:38)*, और एक नई आज्ञाकारिता में जीवन जीने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पाने के लिए, आप पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर फिरते हैं *(2 कुरिन्थियों 7:11; यशायाह 1:16-17)।*

धर्मी ठहराया जाना

उद्धार देने वाला विश्वास सीधे और तुरंत धर्मी ठहराए जाने की ओर ले जाता है। प्रश्नोत्तरी (प्रश्न 36) ऐसा कहती है: *"धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का एक कार्य है। जब मसीह की धार्मिकता हमारे खाते में गिन ली जाती है और हम इसे केवल विश्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं, तो परमेश्वर हमारे सारे पाप क्षमा कर देते हैं और हमें अपने सामने धर्मी के रूप में स्वीकार करते हैं।"*

यह एक कानूनी घोषणा है मसीह ने जो किया है उसके आधार पर, न्यायी परमेश्वर यह घोषणा करते हैं कि पापी अब दोषी नहीं है, बल्कि परमेश्वर के सामने धर्मी (परमेश्वर के साथ सही संबंध में) है। मसीह के कार्य और उनकी धार्मिकता को हमारे खाते में गिना (जोड़ा) जाता है।

धर्मी ठहराया जाना उद्धार देने वाले विश्वास का फल है। केवल विश्वास के द्वारा ही कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया जा सकता है *(रोमियों 3:21-26; गलातियों 2:16; [2 कुरिन्थियों 5:21; रोमियों 10:3-6; जकर्याह 3:1-4; रोमियों 4-5])।*

एंग्लिकन विश्वास-अंगीकार से

यह अनुग्रह की वाचा के द्वारा मसीह के माध्यम से परमेश्वर का किया गया प्रबंध है। यद्यपि कोई भी पाप इतना छोटा नहीं है कि वह दंड के योग्य न हो, फिर भी कोई पाप इतना बड़ा नहीं है कि वह मन फिराव (पश्चाताप) करने वालों को दंड दिला सके। इसीलिए यह बहुत आवश्यक है कि मन फिराव के विषय में लगातार प्रचार किया जाए। (2LCF अध्याय 15, अनुच्छेद 5)

प्रश्न

1) यदि आप एक मसीही हैं, तो अपने मन फिराव (पश्चाताप) का अनुभव लिखिए। जाँच
2) करें कि क्या उसमें उद्धार देने वाले विश्वास और उससे उत्पन्न होने वाले मन फिराव के
3) बाइबल आधारित तत्व मौजूद हैं या नहीं। यदि आप एक मसीही नहीं हैं, तो बाइबल से मन फिराव का एक उदाहरण दीजिए।
   उद्धार देने वाला विश्वास क्या है? बाइबल का एक उदाहरण दीजिए।
   केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषय में आप अपने एक मित्र को कैसे समझाएंगे? उन्हें बताएं कि यह क्यों महत्वपूर्ण है और इसके क्या लाभ हैं।

आगे के अध्ययन के लिए

- ✓ *विश्वास परमेश्वर का दान है (Faith a Gift of God)* - टॉम वेल्स (सत्य की पताका / Banner of Truth)
- ✓ *केवल विश्वास से धर्मी ठहराया जाना (Justified By Faith Alone)* - आर. सी. स्प्राउल (क्रॉसवे / Crossway)
- ✓ *मन फिराव (Repentance)* - जे. सी. राइल (एनेको प्रेस / Aneko Press)

अध्ययन 9: मसीही जीवन जीना

मसीही स्वतंत्रता और पवित्रता

उद्धार देने वाले विश्वास के द्वारा, परमेश्वर की आज्ञा मानकर जीवन जीने के लिए हमें पाप से स्वतंत्र (आज़ाद) किया गया है। यह पवित्र जीवन कोई नई गुलामी नहीं है। एक मसीही पाप की गुलामी से निकलकर व्यवस्था (नियम) की किसी दूसरी गुलामी में नहीं जाता; बल्कि, एक मसीही वास्तव में स्वतंत्र है। 2LCF (कलीसिया का विश्वास-अंगीकार) यह समझाता है:"सुसमाचार के अधीन मसीह ने विश्वासियों के लिए जो स्वतंत्रता मोल ली है, वह पाप के दोष, परमेश्वर के न्याय के क्रोध, और व्यवस्था की कठोरता और श्राप से... पाप के अधिकार, क्लेशों, और मृत्यु के भय से मिलने वाली स्वतंत्रता है। वे अब सीधे परमेश्वर के पास आ सकते हैं। वे गुलामी के डर से नहीं, बल्कि एक छोटे बच्चे के समान प्रेम और अपनी इच्छा से परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं" (2LCF अध्याय 21, अनुच्छेद 1)।

जैसा परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही पवित्र बनने के लिए विश्वासियों को विश्वास के द्वारा स्वतंत्र किया गया है *(1 पतरस 1:15-16)।* यह वह कार्य है जो पवित्र आत्मा विश्वासी के हृदय में करते हैं *(1 पतरस 1:2)।* इस स्वतंत्रता का प्रमाण (सबूत) परमेश्वर की व्यवस्था को मानकर जीवन जीना है *(यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)।*

ऐसी आज्ञाकारिता कभी भी बोझ नहीं होती। एक मसीही प्रेम और भक्ति के साथ मसीह के पीछे चलने में आनंदित होता है *(मत्ती 11:28-30)।* वह हर चीज़ से बढ़कर परमेश्वर की महिमा चाहता है *(1 कुरिन्थियों 10:31)।* प्रभु को जानना और उनकी सेवा करना ही उसका सबसे बड़ा आनंद है *(भजन संहिता 73:25-26; भजन संहिता 119:97)।*

विश्वासी मसीह में मिली अपनी स्वतंत्रता का उपयोग पाप करने की छूट (लाइसेंस) के रूप में नहीं, बल्कि पवित्रता की प्रेरणा और सामर्थ्य के रूप में करता है। वह अपने जीवन की पवित्रता के साथ परमेश्वर के लिए अलग किया जाता है *(तीतुस 3:2-8)।*

पवित्रीकरण (पवित्र किया जाना)

पवित्र किए जाने का अर्थ है परमेश्वर के लिए अलग किया जाना। प्रश्नोत्तरी (प्रश्न 38) ऐसा कहती है: *"पवित्रीकरण परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का एक कार्य है। इसके द्वारा हम परमेश्वर के स्वरूप में नया किए जाते हैं, और पाप के लिए मरने तथा धार्मिकता के लिए जीवन जीने में अधिकाधिक (और भी अधिक) सामर्थी बनते जाते हैं।"*

यह विश्वासी के हृदय, मन और कामों के रूपान्तरित (बदलने) होने की प्रक्रिया है। मृत्यु तक पाप पर जय पाकर पूरी तरह पवित्र होने तक, और जब मसीह लौटेंगे तब शरीर के मसीह के समान रूपान्तरित होने तक, वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदलता रहता है। हमेशा याद रखें कि परमेश्वर अपने लोगों को एक महान उद्देश्य के लिए बचाते हैं (इफिसियों 1:4; रोमियों 8:29)।

पवित्रीकरण की यह प्रक्रिया तीन चरणों वाले एक रॉकेट के समान है:

1) ***उड़ान (Lift-off):*** पाप के साथ एक ही बार में मजबूती से नाता तोड़ना; यह मसीह में सच्ची स्वतंत्रता (आज़ादी) देता है।
2) ***प्रगति (Progress):*** इस समय के दौरान पाप के बचे हुए अंशों को दूर करने का लगातार संघर्ष।
3) ***मंज़िल तक पहुँचना (Arrival)*:** स्वर्ग में पहुँचने पर पाप से पूरी तरह स्वतंत्रता (महिमान्वित होना / महिमा पाना)।

उड़ान (Lift-off): पाप के साथ एक ही बार में मजबूती से नाता तोड़ना

यह मन फिराव के समय होता है। मन फिराव से पहले हम पाप के अधिकार और शासन के अधीन थे। मन फिराव के द्वारा वह गुलामी टूट जाती है। हमें पाप के संसार से निकालकर परमेश्वर के राज्य में पहुँचा दिया जाता है, जहाँ हम पाप की शक्ति से पूरी तरह स्वतंत्र हो जाते हैं *(कुलुस्सियों 1:12-14; रोमियों 6:2-6)।*

यह सब मसीह के साथ हमारी एकता (मिलाप) के द्वारा संभव होता है। जब मसीह मरे, तो उन्होंने पाप पर जय पाई। जब हम विश्वास के द्वारा उनसे जुड़ जाते हैं, तो हम उस जीत में भागीदार बन जाते हैं; हम एक नए जीवन के लिए जी उठते हैं *(1 पतरस 2:24)।*

इसका यह मतलब नहीं है कि हम फिर कभी पाप नहीं करेंगे, बल्कि इसका अर्थ यह है कि अब हम

पाप के गुलाम नहीं हैं। परमेश्वर जैसी माँग करते हैं, वैसा जीवन जीने की सामर्थ्य हमारे पास है। (पौलुस के तर्कों को पूरी तरह से समझने के लिए *रोमियों का 6 वाँ अध्याय* पूरा पढ़ें)।

प्रगति (Progress): पाप के बचे हुए अंशों को दूर करने का लगातार संघर्ष.

1) परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हम में कार्य करते हैं *(फिलिप्पियों 2:12-13; [1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24])।*
2) पाप के खिलाफ लगातार होने वाला संघर्ष हमारे अंदर चलता रहता है *(रोमियों 8:13; 1 तीमुथियुस 6:12; [कुलुस्सियों 3:5; रोमियों 7:14-25])।*
3) अपने जीवन में पवित्रीकरण (पवित्रता) में बने रहने की हमारी ज़िम्मेदारी है *(2 पतरस 1:3-11; [2 कुरिन्थियों 7:1; इब्रानियों 12:14; यूहन्ना 15:5-10])।*
4) जीवन भर, हर दिन हमें आत्मिक युद्ध लड़ना होता है *(इफिसियों 6:10-18; [याकूब 4:7-8; 1 पतरस 5:8-9])।*

जैसे-जैसे हम में धीरे-धीरे बदलाव (रूपान्तरण) होता है, इस कार्य के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू होते हैं:

- नकारात्मक: वे बातें जिन्हें हमें छोड़ देना चाहिए *(इफिसियों 4:25, 31)।*
- सकारात्मक: वे बातें जिन्हें हमें पहन लेना या अपना लेना चाहिए *(कुलुस्सियों 3:12-14)।*
- [ये दोनों एक ही समय पर सक्रिय रूप से कार्य करते हैं, *रोमियों 13:11-14; फिलिप्पियों 3:12-14]।*

इस कार्य में, हमारे बढ़ने (उन्नति करने) के लिए परमेश्वर ने अनुग्रह के साधन (उपाय) दिए हैं:

1) नम्रता (दीनता) के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनें *(1 कुरिन्थियों 1:21; रोमियों 10:14, 17; [प्रेरितों के काम 20:25-27])।*
2) प्रभु के दिन आराधना और संगति (सहभागिता) के लिए परमेश्वर के लोगों के साथ इकट्ठे हों (इब्रानियों 10:19-25, [प्रकाशितवाक्य 1:9-11])।
3) कलीसिया की विधियों, जैसे बपतिस्मा और प्रभु भोज में भाग लें (प्रेरितों के काम 2:38-42; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।
4) व्यक्तिगत रूप से (और परिवार के साथ) परमेश्वर का वचन पढ़ें। यह हर दिन हमारे मन को नया करता है और हमें पवित्रीकरण (पवित्रता) के लिए तैयार करता है

(रोमियों 12:1-2; 2 तीमुथियुस 3:15-16; [भजन संहिता 119:9-16])।

5) प्रतिदिन प्रार्थना करें, प्रार्थना सभाओं में भाग लें, अपने पापों को अंगीकार करें (मान लें), और अपनी हर आवश्यकता के लिए परमेश्वर से माँगें *(इफिसियों 6:18; 1 यूहन्ना 1:5-9; याकूब 1:5, 17; प्रेरितों के काम 2:42)।*
6) कलीसिया की आराधना, जीवन और सेवकाई में सक्रिय रूप से भाग लें *(इफिसियों 4:11-16)।*
7) कलीसिया के सुसमाचार प्रचार के मिशन (कार्य) में सहभागी बनें *(मत्ती 28:18-20)।*

यह सब हम में वास करने वाले पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा किया जाना चाहिए *(1 कुरिन्थियों 6:19-20)।*

मंज़िल तक पहुँचना (Arrival): स्वर्ग में पाप से पूरी तरह स्वतंत्रता – महिमान्वित होना!

1) इसके विषय में हम अगले अध्ययन में और अधिक विस्तार से देखेंगे, परन्तु अभी के लिए केवल इतना ध्यान दें: एक मसीही को इसका पूरा निश्चय (भरोसा) है *(रोमियों 8:28-30; [फिलिप्पियों 1:6])।* जो सचमुच उद्धार पा चुके हैं, वे मसीह के पीछे चलेंगे और महिमा में प्रवेश करेंगे।

2) इसकी महिमा: हम भी मसीह की मानवीय सिद्धता का स्वरूप प्राप्त करेंगे (हम भी मसीह के समान हो जाएँगे) *(1 यूहन्ना 3:2; [फिलिप्पियों 3:21])।*

दूसरे विश्वास-अंगीकार से (2LCF से)

विश्वास नामक अनुग्रह... सामान्यतः वचन की सेवकाई के द्वारा प्राप्त होता है। और इसके माध्यम से, बपतिस्मा, प्रभु भोज, प्रार्थना, और परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अन्य उपायों के द्वारा यह बढ़ता और बलवान होता है (2LCF अध्याय 14, अनुच्छेद 1)।

प्रश्न

1) पवित्रीकरण क्या है? आपको व्यक्तिगत रूप से क्या-क्या बदलाव करने की आवश्यकता है? आपको क्या छोड़ना चाहिए? आपको किन गुणों को बढ़ाना (विकसित करना) चाहिए?

2) आपके पवित्रीकरण के लिए वचन का प्रचार और आराधना कितनी महत्वपूर्ण है? प्रभु के दिन का पूरा लाभ उठाने के लिए आप अपने सप्ताह को कैसे व्यवस्थित करेंगे?

3) बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना आपकी कैसे सहायता करेगा? इस दैनिक अनुशासन को बनाए रखने के लिए आप समय कैसे व्यवस्थित करेंगे?

4) अनुग्रह में बढ़ने के लिए आप अपनी कलीसिया और जीवन में परमेश्वर की सेवा कैसे कर सकते हैं?

और अधिक अध्ययन के लिए

- ✓ *पवित्रता (Holiness)* - जे. सी. राइल (बैनर ऑफ़ ट्रूथ)
- ✓ *जब हम आराधना करते हैं तब क्या होता है (What Happens When We Worship)* - जे. लैंड्री क्रूज़ (रिफॉर्मेशन हेरिटेज)
- ✓ *हरी-भरी चरगाहें (Green Pastures)* - रयान डेविडसन (आर.बी.ए.पी)

मसीही जीवन के लिए आत्मिक अनुशासन (Spiritual Disciplines for The Christian Life) - डोनाल्ड एस. व्हिटनी (नेवप्रेस)

अध्ययन 10: स्वर्ग और नरक

इस अध्ययन में हम तीन बातों पर विचार करेंगे:

1) मसीह का दूसरा आगमन
2) स्वर्ग
3) नरक

मसीह का दूसरा आगमन

परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की, मनुष्य पाप में गिर गया; परंतु अनुग्रह की वाचा के द्वारा परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञा की *(उत्पत्ति 3:15)*। उद्धारकर्ता ने आकर जीवन बिताया, मृत्यु सही, जी उठे, स्वर्ग पर आरोही हुए और पवित्र आत्मा को उड़ेला *(इब्रानियों 1:1-3)*। परमेश्वर की मुक्ति की योजना में अगली घटना उनका शारीरिक रूप से वापस आना है। सभी मसीही इस बात से सहमत हैं कि वे वापस लौटेंगे, फिर भी उनके आगमन से जुड़ी घटनाओं के क्रम के संबंध में मतभेद हैं।

पवित्रशास्त्र के कई भागों में यह सिखाया गया है कि वे महिमा के साथ पृथ्वी पर शारीरिक रूप से वापस लौटेंगे *(मत्ती 25:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17; [मत्ती 24:30-31; प्रेरितों के काम 1:11])*।

उनके आने का समय किसी भी मनुष्य या स्वर्गदूत को नहीं मालूम। इसलिए, जो भी यह दावा करता है कि वह उस दिन या वर्ष की भविष्यवाणी कर सकता है, वह शिक्षा गलत है। उद्धार पाकर और मसीह की वफादारी से सेवा करते हुए, उनके आगमन के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए *(मत्ती 24:36-42; [2 पतरस 3:3-13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-3; मत्ती 25])*।

फिर भी इस 'अन्त के समय' में (मसीह के स्वर्गारोहण से लेकर उनके वापस लौटने तक का समय), मसीहियों ने 'समय के संकेतों' का अनुभव किया है जो यह दिखाते हैं कि उनका आगमन 'निकट है'। इसलिए उन्हें तैयार रहना चाहिए *(मत्ती 24:9-13)*।

(ध्यान दें: मत्ती 24 के कुछ भाग 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के बारे में बात करते हैं, उदाहरण के लिए पद 15-28, लेकिन पद 9-13 इस पूरे युग पर लागू होते हैं।) [2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10; 2 तीमुथियुस 3:1-7; 1 यूहन्ना 2:18-22]

जब मसीह वापस लौटेंगे, तब दो बातें होंगी:

1) सब मरे हुओं का जी उठना *(यूहन्ना 5:28-29; [1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17])।*
2) न्याय *(प्रकाशितवाक्य 20:11-15; [मत्ती 25:31-46; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 पतरस 3:10-13])।*

स्वर्ग

1) जब विश्वासी मरते हैं, तो शरीर के पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करते हुए, उनकी आत्मा तुरंत स्वर्ग में मसीह के साथ होती है *(लूका 23:43; फिलिप्पियों 1:21-23; 2 कुरिन्थियों 5:8; प्रकाशितवाक्य 6:9)।*

2) जब मसीह वापस लौटेंगे, तो उनके शरीर जिलाए जाएंगे (पुनरुत्थान पाएंगे) और फिर से उनकी आत्माओं से मिल जाएंगे *(यूहन्ना 5:28-29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।*

3) वे अपनी पूरी मानवता के साथ अंतिम न्याय में परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। वहाँ उनके जीवन का मूल्यांकन किया जाएगा और न्याय सुनाया जाएगा *(2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1; [प्रकाशितवाक्य 20:12; मत्ती 25:46; 1 कुरिन्थियों 3:11-15])।*

4) मसीह में धर्मी घोषित किए गए वे, परमेश्वर की फिरदौस (स्वर्ग) का आनंद लेने के लिए तैयार होकर अपनी पूरी मानवता (शरीर और आत्मा) में महिमान्वित किए जाएंगे *(फिलिप्पियों 3:20-21; 1 यूहन्ना 3:1-3; [1 कुरिन्थियों 15:22-23; यूहन्ना 6:40])।*

5) तब मसीही मसीह के साथ नए आकाश और नई पृथ्वी पर जीवन बिताएंगे। यह महिमा प्राप्त कर चुके लोगों के आनंद लेने के लिए एक नई की गई भौतिक सृष्टि होगी *(2 पतरस 3:10-13; यूहन्ना 14:1-3)।* [नई सृष्टि के विवरण को पूरा पढ़ना महत्वपूर्ण है। यह आने वाले संसार की महिमा को प्रतीकात्मक रूप से दिखाता है, जो हमारी नित्य (अनंत) आशा को जगाता है *(प्रकाशितवाक्य 21-22)]।*

6) नए आकाश और नई पृथ्वी का जीवन पूर्ण, शाश्वत (अनंत) और हमेशा-हमेशा के लिए

बना रहने वाला है *(मत्ती 25:46)।*

नरक

1) जब अविश्वासी मरते हैं, तो अंतिम न्याय की प्रतीक्षा करने के लिए उन्हें तुरंत नरक में डाल दिया जाता है *(लूका 16:23-24; यहूदा 6-7)।*
2) मसीह के लौटने पर उनके शरीर जिलाए जाएंगे (पुनरुत्थान पाएंगे) और वे फिर से उनकी आत्माओं से मिल जाएंगे *(यूहन्ना 5:28-29)।*
3) अपनी पूरी मानवता के साथ, वे अंतिम न्याय में परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। वहाँ उनके जीवन का मूल्यांकन किया जाएगा और न्याय सुनाया जाएगा *(2 कुरिन्थियों 5:10; प्रेरितों के काम 24:15; रोमियों 14:10-12)।*
4) अपनी दुष्टता, भक्तिहीनता और परमेश्वर के विरोध के कारण वे दंड प्राप्त करेंगे, और अनंत दंड वाले नरक में डाल दिए जाएंगे *(प्रकाशितवाक्य 21:8; प्रकाशितवाक्य 20:11-15; [यहेजकेल 18:20; 1 कुरिन्थियों 6:9-10; प्रकाशितवाक्य 22:15])।*
5) अविश्वासी शैतान, दुष्टात्माओं और पाप में मरे हुओं के साथ अंधकार के एक स्थान पर निवास करेंगे। वे परमेश्वर के प्रति अनंत घृणा बनाए रखेंगे और उनके विरुद्ध दाँत पीसेंगे। फिर भी परमेश्वर द्वारा उन पर किए जाने वाले न्याय से उन्हें कभी छुटकारा नहीं मिलेगा *(प्रकाशितवाक्य 6:14-17; प्रकाशितवाक्य 14:9-11; मरकुस 9:47-48; [2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; मत्ती 8:12])।*
6) दंडित पापी की स्थिति अनंतकाल तक अपरिवर्तनीय और शाश्वत है *(लूका 16:24-26; मत्ती 25:46)।*

व्यावहारिक जीवन

परमेश्वर का न्याय निश्चित है यह जानते हुए (इब्रानियों 9:27), हमें उनके सामने खड़े होने के लिए तैयार रहना चाहिए:

1) जब तक समय है, यह सुनिश्चित करें कि आप उद्धार के लिए आज ही मसीह पर विश्वास करें *(2 कुरिन्थियों 6:1-2)।*
2) मसीह से बाहर होने का अर्थ अनंत नरक है। इसलिए, अनुग्रह के इस समय में जब तक समय बाकी है, हमें नाश होने वालों को सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए *(यूहन्ना 9:4-5; 2 कुरिन्थियों 5:18-21)।*
3) मसीह के लौटने की आशा रखते हुए, उनसे मिलने के लिए तैयार और न्याय के लिए तैयार होकर हमें हर दिन जीना चाहिए। यह जानते हुए कि हर पल महत्वपूर्ण है, हमें

नाश होने वालों को सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए *(यूहन्ना 9:4-5; 2 कुरिन्थियों 5:18-21)।*

4) मसीह के लौटने की आशा रखते हुए, उनसे मिलने के लिए तैयार और न्याय के लिए तैयार होकर हमें हर दिन जीना चाहिए। यह जानते हुए कि हर पल महत्वपूर्ण है, हमें मसीह के लिए उत्तम ढंग से जीवन बिताना चाहिए *(1 कुरिन्थियों 9:24-27; [2 पतरस 3:14; फिलिप्पियों 3:12-14])।*
5) यह जानते हुए कि मसीह के लौटने पर सब कुछ नया हो जाएगा, और हम सदा के लिए फिरदौस में उनके साथ आनंदित होंगे, हमें उनके आगमन की लालसा के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए *(प्रकाशितवाक्य 21:1-7; [प्रकाशितवाक्य 22:20-21; रोमियों 8:18-25])।*

एंग्लिकन विश्वास-अंगीकार से (2LCF से)

मसीह यह चाहता है कि हम इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हों कि न्याय का एक दिन आने वाला है; यह सभी को पाप से दूर करने, और क्लेश सहने वाले परमेश्वर के भक्तों को अधिक सांत्वना देने के लिए है। इसी प्रकार, वे यह भी चाहते हैं कि वह दिन मनुष्यों के लिए अज्ञात (गुप्त) रहे। चूँकि यह ज्ञात नहीं है कि प्रभु किस समय आएंगे, इसलिए सभी को शारीरिक (संसारिक) निश्चिंतता की भावना को त्यागकर हमेशा जागते रहना चाहिए। "हे प्रभु यीशु, जल्दी आ; आमीन" कहने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए (2LCF अध्याय 32, अनुच्छेद 3)।

प्रश्न

1) स्वर्ग में लोग कैसे पहुँचते हैं? क्या सभी लोग अंत में वहाँ पहुँचते हैं?
2) नरक कैसा होगा? यदि कोई व्यक्ति नरक में पहुँच जाए, तो क्या वहाँ से छूट पाना संभव है?
3) स्वर्ग के बारे में सोचना एक मसीही को कैसे उत्साहित करता है?

और अधिक अध्ययन के लिए

- ✓ *स्वर्ग सबसे उत्तम स्थान है (Heaven is a Far Better Place)* - एरल डेविस (इवेंजेलिकल प्रेस)
- ✓ *नरक को क्या हुआ? (Whatever Happened to Hell?)* - जॉन ब्लैंचर्ड (इवेंजेलिकल प्रेस)

अध्ययन 11: कलीसिया

कलीसिया क्या है?

अपने आप से पूछिए कि "कलीसिया" क्या है। अपने पहले विचारों की जाँच कीजिए और उन्हें लिखिए। सामान्य रूप से इस शब्द का उपयोग कैसे किया जाता है?

'कलीसिया' (Church) शब्द का अर्थ 'सभा' या 'समूह' है। यह इमारतों (भवनों) या संगठनों को नहीं, बल्कि लोगों को सूचित करता है। और यह पदानुक्रम (अधिकार-श्रेणी) वाले मानवीय संगठनों का बिल्कुल भी अर्थ नहीं रखता! नए नियम में इस शब्द का उपयोग दो तरीकों से किया गया है:

1) स्थानीय कलीसियाएँ: विशेष स्थानों पर स्थित कलीसियाएँ *(प्रेरितों के काम 11:25-26; 14:23; 15:41)।*
2) सार्वभौमिक कलीसिया: सभी समयों में और हर जगह के सभी विश्वासियों को शामिल करने वाली कलीसिया *(इफिसियों 3:21; कुलुस्सियों 1:18)।*

कलीसिया को मसीह की देह कहा जाता है; यह मसीह में विश्वासियों की संगति है *(इफिसियों 1:22-23; 5:29-30; [प्रेरितों के काम 14:27; 1 कुरिन्थियों 11:18])।*

इसके सदस्य कौन हैं?

जो मसीह में विश्वास करने के लिए बुलाए गए हैं, और जिन्हें उसने छुड़ाकर पवित्र किया है, वे इसके सदस्य हैं *(1 कुरिन्थियों 1:2; [इफिसियों 5:25-26; प्रेरितों के काम 5:14])।* मसीह के बुलावे के प्रति उनकी आज्ञाकारिता निम्नलिखित तरीकों से प्रकट होती है:

1) **बपतिस्मा:** बपतिस्मा के द्वारा वे मसीह में अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हैं *(प्रेरितों के काम 2:41; 16:14-15)।*
2) **संगति:** आराधना और सेवकाई के लिए वे पवित्र लोगों की सभा में एक साथ जुड़ते हैं *(प्रेरितों के काम 14:27; इब्रानियों 10:19-25)।*

3) **समर्पण:** वे कलीसिया के जीवन, गवाही और मिशन (प्रचार) के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं (प्रेरितों के काम 2:42-47)।

यदि कोई व्यक्ति विश्वासी बन जाता है, तो नया नियम यह स्पष्ट करता है कि उसे बपतिस्मा, आराधना, सेवकाई और मिशन के लिए एक स्थानीय कलीसिया में जुड़ना चाहिए *(प्रेरितों के काम 5:14)*। कलीसियाएँ अपने सदस्यों को स्पष्ट रूप से पहचानती और स्वीकार करती थीं *(1 कुरिन्थियों 5:13)*।

स्थानीय कलीसिया का बुलावा और उद्देश्य क्या है?

1) **सामूहिक आराधना:** कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि केवल गाना गाना ही आराधना है, लेकिन बाइबल में आराधना का अर्थ बहुत व्यापक है। वचन सुनना, प्रार्थना करना, बाइबल पढ़ना, प्रचार करना, पापों को स्वीकार करना, और गाना—यह सब इसमें शामिल है। पृथ्वी पर कलीसिया का सबसे ऊँचा बुलावा यही है। हम स्वर्ग की कलीसिया के साथ परमेश्वर के सिंहासन के सामने आराधना करने के लिए जुड़ते हैं *(इब्रानियों 12:22-24; प्रकाशितवाक्य 4:8-11; [यूहन्ना 4:23-24; कुलुस्सियों 3:16-17; भजन संहिता 100])*।
2) **प्रेरितों की गवाही:** मसीह ने कलीसिया को इस बात के लिए बुलाया है कि वह नए नियम में प्रेरितों के द्वारा परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए विश्वास (सत्य शिक्षाओं) को स्वीकार करे, ऊँचा उठाए, और उसकी रक्षा करे *(प्रेरितों के काम 20:25-31; 1 तीमुथियुस 3:14-16; [यहूदा 3; 2 तीमुथियुस 1:13-2:2; तीतुस 2:1])*।
3) **प्रचार की सेवकाई:** कलीसिया जिस परमेश्वर के वचन को स्वीकार करती है, उसकी घोषणा प्रचार के द्वारा की जानी चाहिए *(1 कुरिन्थियों 1:21-24; रोमियों 10:14-17; [1 कुरिन्थियों 2:1-5; 2 तीमुथियुस 4:1-4])*।
4) **मसीह की आज्ञाएँ:** कलीसिया को मसीह की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा और प्रभु भोज मनाना चाहिए *(मत्ती 28:19-20; 1 कुरिन्थियों 11:26)*। अगला अध्ययन देखिए।
5) **प्रेम की संगति:** जब सदस्य मसीह में एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और एक-दूसरे की सेवा करते हैं, तो मसीह का प्रेम कलीसिया में प्रकट होना चाहिए *(यूहन्ना 13:34-35; कुलुस्सियों 3:12-15; [रोमियों 12:9-21; यूहन्ना 13:1-17])*। यह संगति कलीसियाओं के बीच भी प्रेम के साथ बांटी जानी चाहिए *(रोमियों 16:1-2; 3 यूहन्ना 5-12)*।
6) **सही अनुशासन:** कलीसिया में सदस्यों की आत्मिक भलाई और मसीह की महिमा के लिए उन्हें सुधारने हेतु आवश्यक प्रेम होना चाहिए *(गलातियों 6:1-2; 1 कुरिन्थियों 5:1-5; मत्ती 18:15-18)*।

7) **विश्व सुसमाचार का सेवकाई:** मसीह की आज्ञा के अनुसार सभी जातियों को सुसमाचार का प्रचार करके उनके आगमन को शीघ्र करने का कलीसिया को प्रयास करना चाहिए (मत्ती 28:16-20; रोमियों 1:16-17)।

कलीसिया पर शासन कैसे किया जाता है?

कलीसिया का सिर (प्रधान) केवल मसीह है; चाहे वह वैश्विक स्तर पर हो या स्थानीय स्तर पर, यही सत्य है (2LCF)। जैसा कि हम विश्वास-अंगीकार में पढ़ते हैं: *"प्रभु यीशु मसीह कलीसिया के सिर हैं। पिता द्वारा ठहराए जाने के अनुसार, कलीसिया के बुलावे, स्थापना, क्रम या शासन के लिए सारा अधिकार सर्वोच्च और संप्रभु तरीके से मसीह में निहित है।" (2LCF अध्याय 26, अनुच्छेद 4)। देखिए: इफिसियों 1:22-23; कुलुस्सियों 1:18; [इफिसियों 5:23]।*

जब पवित्र आत्मा विश्वासियों की संगति में परमेश्वर के वचन की सेवकाई को लागू करता है, तो कलीसियाओं में मसीह का शासन व्यावहारिक रूप से स्थापित होता है। इस प्रकार, वे मसीह के मन को जानते हैं और सभी बातों में उसकी आज्ञा मानते हुए जीवन बिताते हैं *(कुलुस्सियों 3:15-17; 1 कुरिन्थियों 2:13-16)।*

जब विश्वासी आत्मा में एक साथ इकट्ठा होते हैं, तो पूरी कलीसिया मसीह के आधीन होती है। अंतिम अधिकार कलीसिया की सभा के पास होता है (इसे कॉन्ग्रेशनल गवर्नमेंट यानी कलीसियाई शासन प्रणाली कहा जाता है)। इसे पहले बताई गई अनुशासन की कार्रवाइयों में देखा जा सकता है *(गलातियों 6:1-2; 1 कुरिन्थियों 5:1-5; मत्ती 18:15-18)।*

मसीह की आवाज़ सुनने के लिए, आत्मा में एक साथ चलने के लिए, पिता का आदर करने के लिए, और प्रभु ने उन्हें जो कुछ भी सौंपा है उन सभी कामों को पूरा करने के लिए, मसीह अपनी कलीसिया को प्राचीन (एल्डर्स) प्रदान करता है *(इफिसियों 4:11-13)।*

स्थानीय कलीसिया में नेतृत्व कौन करता है?

कलीसिया के आत्मिक नेताओं को प्राचीन (Elders), अध्यक्ष (Overseers), चरवाहे (Pastors), सेवक (Ministers), और अधीन चरवाहे (Under-shepherds) जैसे कई नामों से पुकारा जाता है (चूँकि वे केवल मसीह को प्रभु मानते हैं, इसलिए उनका अधिकार मसीह के आधीन है)। ये नाम एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जा सकते हैं।

मसीह ने उन्हें मसीह का प्रचार करने, सिखाने, अगुवाई करने, चराने, सेवा करने और वफादारी से काम करने के लिए बुलाया है। वे मसीह के झुंड के लिए आदर्श हैं। मसीह ने उन्हें कलीसिया पर हुकूमत करने के लिए नहीं, बल्कि कलीसिया के लिए आशीष बनने और उन्हें अपने प्रभु की इच्छा और सोच की ओर ले जाने के लिए कलीसिया को दान के रूप में दिया है *(1 पतरस 5:1-4; [प्रेरितों के काम 20:25-31; 1 तीमुथियुस 4:12-16])।*

कलीसियाएँ प्राचीनों को खोजने, तैयार करने, अलग करने, उनका समर्थन करने और उनके लिए प्रार्थना करने की ज़िम्मेदार हैं। सदस्य प्राचीनों के आत्मिक मार्गदर्शन को स्वीकार करने, उनका आदर करने और उनके नेतृत्व के आधीन रहने के लिए बाध्य हैं *(1 तीमुथियुस 5:17-20; [इब्रानियों 13:7, 17; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12-13])।*

बाइबल उन अनुग्रहों और वरदानों को स्पष्ट रूप से बताती है जो प्राचीनों में होने चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1-7; [तीतुस 1:5-9])।

डिकन (उपयाजको) या सेवक (Servants) कहलाने वाले नेताओं का एक दूसरा समूह भी कलीसिया में है। वे सदस्यों की व्यावहारिक ज़रूरतों को पूरा करके और वचन की सेवकाई तथा प्रार्थना में प्राचीनों का समर्थन करके उनकी सहायता करते हैं *(प्रेरितों के काम 6:1-6; फिलिप्पियों 1:1; [1 तीमुथियुस 3:8-13])।*

दूसरे विश्वास-अंगीकार से (2LCF से)

इन कलीसियाओं के सदस्य बुलाए गए पवित्र लोग हैं। वे अपने जीवन और कार्यों के द्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि वे मसीह के बुलावे के आधीन हैं। वे मसीह की आज्ञा के अनुसार एक साथ चलने, अपने आप को प्रभु और एक-दूसरे को समर्पित करने, और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सुसमाचार के नियमों के आधीन जीवन बिताने के लिए स्वेच्छा से सहमत होते हैं (2LCF अध्याय 26, अनुच्छेद 6)।

प्रश्न

1) कलीसिया क्या है?
2) कलीसिया में कौन-कौन सदस्य बनने चाहिए? सदस्यता के लिए क्या योग्यताएँ हैं?
3) किसी कलीसिया में शामिल होने का निर्णय लेते समय आपको किन बातों पर ध्यान देना चाहिए? आप कैसे जान सकते हैं कि कोई कलीसिया अपने बुलावे को पूरा कर रही है?
4) कलीसिया के सिर मसीह और प्राचीनों (एल्डर्स) के बीच क्या संबंध है?

5) *स्थानीय कलीसिया नामक देह में आपका स्थान क्या है? आपकी ज़िम्मेदारियाँ और अधिकार क्या हैं?*

और अधिक अध्ययन के लिए

- ✓ *एक सच्ची कलीसिया की महिमा (The Glory of a True Church)* - बेंजामिन कीच (फ्री ग्रेस प्रेस)
- ✓ *पिता के घर में जीवन (Life in the Father's House)* - वेन ए. मैक और डेविड स्वावली (आर एंड आर)
- ✓ *कलीसिया के सदस्य बनें या नहीं? (To Be or Not To Be a Church Member?)* - वेन ए. मैक (कैल्वरी प्रेस)
- ✓ *कलीसिया के सदस्यों के लिए मार्गदर्शक (The Church Members' Guide)* - जॉन एंजेल जेम्स (सॉलिड ग्राउंड क्रिश्चियन बुक्स)

अध्ययन 12: बपतिस्मा और प्रभु भोज

बपतिस्मा और प्रभु भोज प्रभु यीशु की ठहराई हुई आज्ञाएँ हैं। व्यवस्थापक (नियम बनाने वाले) स्वयं उन्होंने ही इन्हें स्थापित किया है। वह यह चाहते हैं कि दुनिया के अंत तक उनकी कलीसिया में ये लगातार जारी रहें (2LCF अध्याय 28, अनुच्छेद 1)।

बपतिस्मा क्या है?

बपतिस्मा आंतरिक परिवर्तन का एक बाहरी और दृश्य चिन्ह है। पानी आत्मिक रूप से कुछ नहीं कर सकता; यह इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर ने अंदर क्या काम किया है।

'बपतिस्मा' (Baptism) शब्द का अर्थ डुबाना या पूरी तरह पानी में डालना है। इसलिए, विश्वास की अंगीकार के आधार पर, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से किसी व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से पानी में डुबाना ही बपतिस्मा है *(मत्ती 28:18-20)*। बपतिस्मा के द्वारा, वह मसीह के साथ अपनी वाचा की प्रतिबद्धता को पक्का करता है, और प्रभु की वफादार सेवा की गवाही को सार्वजनिक रूप से शुरू करता है *(प्रेरितों के काम 9:10-22)*।

बपतिस्मा किस बात को इंगित करता है?

1) मसीह के साथ एकता: उनके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में भागीदार होना *(रोमियों 6:1-6; [गलातियों 3:27; कुलुस्सियों 2:12])*।
2) पापों से शुद्धिकरण: पापों का धोया जाना *(मरकुस 1:4; प्रेरितों के काम 22:16)*।
3) कलीसिया में प्रवेश: कलीसिया के अन्य लोगों के साथ साझा किए जाने वाले विश्वास की घोषणा के आधार पर कलीसिया में जोड़े जाना *(प्रेरितों के काम 2:37-42; इब्रानियों 10:22-23; [रोमियों 10:9-10; 1 तीमुथियुस 6:12; इफिसियों 4:4-6])*।
4) पवित्र आत्मा को ग्रहण करना: *(प्रेरितों के काम 2:38; [प्रेरितों के काम 19:5-6; 1 कुरिन्थियों 12:13])*।
5) वाचा की प्रतिबद्धता: मसीह की पूरी तरह आज्ञा मानने और सेवा करने, तथा नया जीवन बिताने के लिए नए विश्वासी की वाचा *(रोमियों 6:4; प्रेरितों के काम 2:41-42)*।

किसे बपतिस्मा देना चाहिए?

परमेश्वर के प्रति पश्चाताप, और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास तथा उसकी आज्ञाकारिता को खुलकर (सार्वजनिक रूप से) स्वीकार करने वाले ही बपतिस्मा के योग्य हैं *(2LCF, अध्याय 28, अनुच्छेद 2)।*

प्रभु यीशु ने आज्ञा दी कि विश्वास की घोषणा के आधार पर ही बपतिस्मा दिया जाना चाहिए *(मत्ती 28:18-20)।*

नए नियम में बपतिस्मा के जितने भी उदाहरण हैं, वे सब उन लोगों के हैं जिन्होंने सार्वजनिक रूप से अपने विश्वास को स्वीकार किया था *(प्रेरितों के काम 8:36-37; [प्रेरितों के काम 10:43-48])।*

जहाँ यह कहा जाता है कि पूरे परिवार ने बपतिस्मा लिया, वहाँ यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि उसमें अविश्वासी शामिल थे *(प्रेरितों के काम 16:14-15, 31-33)।*

यदि बपतिस्मा मसीह के साथ एकता, पापों से शुद्धिकरण, कलीसिया में प्रवेश, आत्मा की परिपूर्णता, और वाचा को इंगित करता है, तो यह समझ पाना असंभव है कि यह किसी ऐसे व्यक्ति पर कैसे लागू हो सकता है जो विश्वासी नहीं है; यह तो ऐसी बात पर चिन्ह (निशान) लगाने जैसा है जो घटी ही न हो।

कुछ कलीसियाएँ शिशुओं (बच्चों) को बपतिस्मा क्यों देती हैं?

वे पुराने नियम के खतना को नए नियम के बपतिस्मा से जोड़ते हैं। उनका मानना है कि जैसे इब्राहीम के साथ हुई वाचा में लड़के खतना के द्वारा पुरानी वाचा में प्रवेश करते थे, वैसे ही बपतिस्मा के द्वारा वे नई वाचा में प्रवेश करते हैं। लेकिन, बाइबल पुराने नियम के खतना को बपतिस्मा से नहीं, बल्कि नए जन्म (आत्मिक परिवर्तन) से जोड़ती है। पुराने नियम में वह शरीर में था, तो नए नियम में वह पवित्र आत्मा के द्वारा हृदय में होता है *(व्यवस्थाविवरण 10:16; रोमियों 2:25-29; कुलुस्सियों 2:11)।*

बाइबल के अनुसार खतना और बपतिस्मा के बीच कोई संबंध नहीं है। परमेश्वर की वाचा के लोग अब कोई एक वंश या भाषा नहीं हैं, बल्कि मसीह में विश्वास करने वाले सभी गोत्रों, भाषाओं और जातियों में से हैं। अब, उद्धार पाने वाले विश्वास के द्वारा लोग परमेश्वर के पवित्र लोगों की संगति में जोड़े जाते हैं। यह उस बपतिस्मा के द्वारा प्रकट होता है जो विश्वास का अनुसरण करता है और उसे चिन्हित करता है *(इफिसियों 2:11-22)।*

बाइबल के अनुसार बपतिस्मा की रीति क्या है?

जैसा कि 'बपतिस्मा' शब्द का अर्थ है, और जैसा कि नए नियम का उदाहरण दिखाता है, पानी में पूरी तरह डूबना ही बपतिस्मा है *(मत्ती 3:16; यूहन्ना 3:23)*।

क्या विश्वासी के लिए बपतिस्मा ज़रूरी है?

यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए चोर ने उद्धार तो पाया, लेकिन उसके पास बपतिस्मा लेने का समय नहीं था *(लूका 23:43)*। लेकिन यह मसीही के जीवन में बपतिस्मा के महत्व को कम करके नहीं बताता। क्योंकि, उसके पास न तो अच्छे काम करने का समय था, न कलीसिया में जुड़ने का, न आराधना में भाग लेने का, और न ही प्रचार सुनने का। लेकिन हम यह मानते हैं कि ये सब एक विश्वासी के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

बपतिस्मा निम्नलिखित कारणों से अति आवश्यक है:

1) यह मसीह की आज्ञा है: यह उनकी नई वाचा के लोगों के लिए उनके द्वारा ठहराई गई आज्ञा है *(मत्ती 28:19)*।
2) यीशु ने स्वयं इसे एक आदर्श (नमूना) बनाया: जब उन्होंने यूहन्ना द्वारा यरदन में बपतिस्मा लिया, तो उन्होंने पापियों के साथ अपनी समानता दिखाई और अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान को इंगित किया *(मत्ती 3:13-17)*।
3) यह वह क्षण है जब त्रिएक परमेश्वर का नाम और आशीष व्यक्तिगत रूप से हमारे ऊपर उड़ेली जाती है *(मत्ती 28:19)*।
4) यह मसीह के साथ हमारी एकता और पापों से शुद्धिकरण को इंगित करता है; जब हम प्रेरितिक विश्वास को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हैं, तो हम कलीसिया में प्रवेश करते हैं, और यह हमारे जीवन में आत्मा की परिपूर्णता को भी दिखाता है।
5) यह नए जीवन में मसीह के लिए जीने की हमारी विश्वास की घोषणा और वाचा की प्रतिबद्धता है।

इसलिए, मसीह के प्रत्येक वफादार अनुयायी के लिए बपतिस्मा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रभु भोज क्या है?

प्रभु भोज नए नियम की एक आज्ञा है। इसके मूल सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

- एक स्थानीय कलीसिया *(1 कुरिन्थियों 1:2);*
- प्रभु के दिन में *(1 कुरिन्थियों 11:25-26; प्रेरितों के काम 20:7);*
- एक साथ एक मेज पर भाग लेते हैं *(1 कुरिन्थियों 11:20-22, 33-34);*
- रोटी और दाखमधु शामिल हैं *(1 कुरिन्थियों 11:23-26);*
- मसीह के सेवक इसे सभी को बांटते हैं *(1 कुरिन्थियों 11:24);*
  इसके द्वारा मसीह की देह और लहू से मिलने वाले आत्मिक पोषण से एक साथ जुड़ी
- कलीसिया को दर्शाया जाता है *(1 कुरिन्थियों 10:16-17; 11:24-25);*
- यह मसीह की मृत्यु और पापों की क्षमा (प्रायश्चित) की घोषणा करता है *(1 कुरिन्थियों 11:26)।*

प्रभु भोज की स्थापना स्वयं यीशु ने की थी। उन्होंने अपने लोगों को बुलाया कि वे उन्हें याद करें, अपने विश्वास को ताज़ा करें, आत्मिक रूप से उन्हें ग्रहण करें, और उनके साथ संगति रखें। जैसा कि रोटी और दाखमधु में प्रतीकात्मक रूप से दिखाया गया है, यह एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ आत्मिक संगति का काम है *(मत्ती 26:26-30; [मरकुस 14:22-26; लूका 22:17-23])।*

यह अनुग्रह का एक साधन है। इसके द्वारा प्रभु हमें अपने निकट खींचता है। वह हमें आमंत्रित करता है कि हम विश्वास और धन्यवाद के साथ अपने हृदय में उसे ग्रहण करें *(1 कुरिन्थियों 10:16-17)।*

यह उन लोगों के लिए है जिन्होंने विश्वास को स्वीकार किया है, बपतिस्मा लिया है, कलीसिया के सदस्य बने हैं, और सह-विश्वासियों के साथ वफादारी से चल रहे हैं (प्रेरितों के काम 2:38-42)। विश्वासियों का बिना गंभीरता के प्रभु भोज में भाग लेना व्यक्तियों और कलीसिया के लिए गंभीर परिणाम ला सकता है *(1 कुरिन्थियों 11:17-34)।*

[पवित्र मेज की रोटी या दाखमधु में कोई बदलाव नहीं होता, उसमें कोई जादुई शक्ति नहीं है। बपतिस्मा की तरह ही, यह आत्मिक रूप से तभी सार्थक होता है जब उद्धार पाने वाले विश्वासी इसमें भाग लेते हैं।]

दूसरे विश्वास-अंगीकार से

इस आज्ञा की दृश्यमान रोटी और दाखमधु को बाहर से ग्रहण करने वाले योग्य लोग, विश्वास के द्वारा अपने हृदय से मसीह की मृत्यु और उसके सभी परिणामों को ग्रहण करते हैं (2LCF अध्याय 30, अनुच्छेद 7)।

प्रश्न

1) 'मामोदीसा' (शिशुओं को बपतिस्मा देना) और बाइबल के अनुसार बपतिस्मा (विश्वासी का बपतिस्मा) के बीच क्या अंतर है?
2) यदि आप अपने किसी मित्र को बपतिस्मा के लिए आमंत्रित करते हैं, और वे पूछते हैं कि यह क्या है, तो आप उन्हें क्या उत्तर देंगे?
3) प्रभु भोज का क्या महत्व है? एक मसीही को इसके लिए कैसे तैयारी करनी चाहिए, और उसे इससे क्या लाभ प्राप्त करना चाहिए?

और अधिक अध्ययन के लिए

- ✓ *बपतिस्मा और कलीसिया की सदस्यता (Baptism and Church Membership)* - बिल जेम्स (इवांजेलिकल प्रेस)
- ✓ *क्या शिशुओं को बपतिस्मा देना चाहिए? (Should Babies Be Baptised?)* - टी.ई. वाटसन (ग्रेस पब्लिकेशन्स)
- ✓ *प्रभु भोज अनुग्रह का उत्सव है (The Lord's Supper is a Celebration of Grace)* - गॉर्डन जे. केडी (इवांजेलिकल प्रेस)
- ✓ *अनुग्रह के साधन के रूप में प्रभु भोज: मात्र एक याद से बढ़कर (The Lord's Supper as a Means of Grace: More Than a Memory)* - रिचर्ड सी. बार्सेलोसो (मेंटर)

यहाँ से मुझे कहाँ जाना चाहिए?

अपने आप से पूछिए: क्या मैं एक सच्चा मसीही हूँ?

यदि ऐसा है, तो क्या मैं किसी स्थानीय कलीसिया का बपतिस्मा-प्राप्त सदस्य हूँ? क्या मैं प्रभु के प्रत्येक दिन (रविवार) अनुग्रह के साधनों के आधीन रहता हूँ, और परमेश्वर के प्रेम में तथा मसीह के स्वरूप में बढ़ रहा हूँ? यदि नहीं, तो आप जिन भी परीक्षाओं का सामना करने वाले हैं, उनमें एक मसीही के रूप में स्थिर रहने और आपकी आत्मिक वृद्धि के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो याद रखिए, यह जीवन और मृत्यु का, तथा स्वर्ग और नरक का विषय है। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से, यीशु मसीह के माध्यम से तुरंत परमेश्वर की खोज कीजिए।

और अधिक पढ़ने के लिए, बाइबल पर आधारित किसी स्थानीय कलीसिया को खोजने के लिए, या व्यक्तिगत मार्गदर्शन और सहायता के लिए, कृपया प्रकाशकों को ईमेल भेजें:
tfkchristianeducation@gmail.com

Notes :

इस पाठ्य पुस्तक की प्रतियाँ निम्नलिखित वितरक से प्राप्त की जा सकती हैं:

TFK CHRISTIAN EDUCATION CENTER

CHEPPAD. P.O, 690 507

KERALA STATE, INDIA

tfkchristianeducation@gmail.com

Phone: 96669 13402

'क्रिश्चियन बेसिक्स' (मसीही बुनियादें) सरल और आकर्षक तरीके से मसीही विश्वास का परिचय देती है। नए विश्वास में आने वालों को बुनियादी विश्वास की बातें सिखाने के लिए तैयार किया गया यह सरल कोर्स, बाइबल अध्ययन कक्षाओं और नए सदस्यों के लिए कक्षाओं में उपयोग किया जा सकता है। मसीही विश्वास के बारे में जानने के इच्छुक लोगों को यह एक उपहार के रूप में भी दिया जा सकता है। बाइबल पढ़ने और प्रचार सुनने के माध्यम से, यह आप में एक ऐसी नींव रखने में मदद करता है जिस पर आप आगे की बातों को मजबूत कर सकें। प्रत्येक अध्याय के अंत में चर्चा के लिए प्रश्न भी शामिल किए गए हैं। छोटों और बड़ों दोनों के लिए, 'मसीही बुनियादें' बाइबल के बड़े विचारों के लिए एक छोटे परिचय के रूप में मदद करती है।

लगभग 25 वर्षों से इंग्लैंड के 'ग्रेस चर्च' में नए विश्वासियों को स्थिर करने और मसीही विश्वास में रुचि रखने वालों को इसका परिचय देने के लिए इस अध्ययन का उपयोग किया जाता रहा है। बच्चों को पढ़ाने के लिए भी इसे व्यवस्थित किया गया है। भारत, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, यूएसए, केन्या, मलेशिया और यूके जैसे देशों में इसका उपयोग किया जाता है। कई साल पहले इसका तमिल में भी अनुवाद किया गया था, और अब यह मलयालम में भी प्रकाशित हो रहा है।

1973 से 2013 तक जॉन हॉल ग्रेस चर्च के एक प्राचीन थे। यह कलीसिया वर्तमान में यूके में ब्रिस्टल के पास येट में मिलती है।

